# قرآن مجید

## लफ़्ज़ी तरजुमा

# قَدْ سَمِعَ اللّٰهُ

## पारा - 28

eParah

## رُكُوْعَاتُهَا: 3 — 105 سُوْرَةُ الْمُجَادَلَةِ مَدَنِيَّةٌ 58 — اٰيَاتُهَا: 22

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| قَدْ | سَمِعَ | اللّٰهُ | قَوْلَ | الَّتِىْ | تُجَادِلُكَ | فِىْ زَوْجِهَا |
| तहक़ीक़ | सुन ली | अल्लाह ने | बात | उस औरत की जो | झगड़ रही थी आपसे | अपने शौहर के बारे में |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَتَشْتَكِىْٓ | اِلَى اللّٰهِ ۖ | وَاللّٰهُ | يَسْمَعُ | تَحَاوُرَكُمَا ؕ | اِنَّ | اللّٰهَ |
| और वो शिकायत कर रही थी | अल्लाह से | और अल्लाह | वो सुन रहा था | गुफ़्तगू तुम दोनों की | बेशक | अल्लाह |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| سَمِيْعٌۢ | بَصِيْرٌ ① | اَلَّذِيْنَ | يُظٰهِرُوْنَ | مِنْكُمْ | مِّنْ نِّسَآئِهِمْ |
| ख़ूब सुनने वाला है | ख़ूब देखने वाला है | वो लोग जो | ज़िहार करते हैं | तुम में से | अपनी बीवियों से |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| مَّا | هُنَّ | اُمَّهٰتِهِمْ ؕ | اِنْ | اُمَّهٰتُهُمْ | اِلَّا | الّٰٓـِٔىْ | وَلَدْنَهُمْ ؕ |
| नहीं हैं | वो | मांएें उनकी | नहीं | मांएें उनकी | मगर | वो जिन्होंने | जन्म दिया उन्हें |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَاِنَّهُمْ | لَيَقُوْلُوْنَ | مُنْكَرًا | مِّنَ الْقَوْلِ | وَزُوْرًا ؕ | وَاِنَّ | اللّٰهَ |
| और बेशक वो | अलबत्ता वो कहते हैं | नामाक़ूल/नापसंदीदा | बात | और झूठ | और बेशक | अल्लाह |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| لَعَفُوٌّ | غَفُوْرٌ ② | وَالَّذِيْنَ | يُظٰهِرُوْنَ | مِنْ نِّسَآئِهِمْ | ثُمَّ |
| अलबत्ता बहुत माफ़ करने वाला है | बहुत बख़्शने वाला है | और वो लोग जो | ज़िहार करते हैं | अपनी बीवियों से | फिर |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| يَعُوْدُوْنَ | لِمَا | قَالُوْا | فَتَحْرِيْرُ | رَقَبَةٍ | مِّنْ قَبْلِ | اَنْ |
| वो रुजूअ कर लेते हैं | उससे जो | उन्होंने कहा | पस आज़ाद करना है | एक गर्दन का | इससे क़ब्ल | कि |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| يَّتَمَآسَّا ؕ | ذٰلِكُمْ | تُوْعَظُوْنَ | بِهٖ ؕ | وَاللّٰهُ | بِمَا | تَعْمَلُوْنَ |
| वो दोनों एक दूसरे को छुएं | ये है | तुम नसीहत किए जाते हो | जिस की | और अल्लाह | उससे जो | तुम अमल करते हो |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| خَبِيْرٌ ③ | فَمَنْ | لَّمْ | يَجِدْ | فَصِيَامُ | شَهْرَيْنِ | مُتَتَابِعَيْنِ |
| ख़ूब बाख़बर है | तो जो कोई | ना | पाए (ग़ुलाम) | तो रोज़े रखना है | दो माह के | मुसलसल |

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| مِنْ قَبْلِ | اَنْ | يَّتَمَآسَّا ؕ | فَمَنْ | لَّمْ | يَسْتَطِعْ | فَاِطْعَامُ |
| इससे क़ब्ल | कि | वो दोनों एक दूसरे को छुऐं | तो जो कोई | ना | इस्तिताअत रखता हो | तो खाना खिलाना है |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| سِتِّيْنَ | مِسْكِيْنًا ؕ | ذٰلِكَ | لِتُؤْمِنُوْا | بِاللّٰهِ | وَ رَسُوْلِهٖ ؕ | وَ تِلْكَ |
| साठ | मिस्कीनों का | ये (इस लिए है) | ताकि तुम ईमान लाओ | अल्लाह पर | और उसके रसूल पर | और ये |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| حُدُوْدُ | اللّٰهِ ؕ | وَ لِلْكٰفِرِيْنَ | عَذَابٌ | اَلِيْمٌ ④ | اِنَّ | الَّذِيْنَ |
| हुदूद हैं | अल्लाह की | और काफ़िरों के लिए | अज़ाब है | दर्दनाक | बेशक | वो लोग जो |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| يُحَآدُّوْنَ | اللّٰهَ | وَ رَسُوْلَهٗ | كُبِتُوْا | كَمَا | كُبِتَ | الَّذِيْنَ |
| मुख़ालिफ़त करते हैं | अल्लाह की | और उसके रसूल की | वो ज़लील किए जाऐंगे | जैसा कि | ज़लील किए गए थे | वो लोग जो |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| مِنْ قَبْلِهِمْ | وَ قَدْ | اَنْزَلْنَآ | اٰيٰتٍۭ | بَيِّنٰتٍ ؕ | وَ لِلْكٰفِرِيْنَ | عَذَابٌ |
| उनसे पहले थे | और तहक़ीक | नाज़िल कीं हमने | आयात | वाज़ेह | और काफ़िरों के लिए है | अज़ाब |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| مُّهِيْنٌ ⑤ ۚ | يَوْمَ | يَبْعَثُهُمُ | اللّٰهُ | جَمِيْعًا | فَيُنَبِّئُهُمْ | بِمَا |
| रुस्वा करने वाला | जिस दिन | उठाएगा उन्हें | अल्लाह | सब के सबको | फिर वो बताएगा उन्हें | वो जो |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| عَمِلُوْا ؕ | اَحْصٰىهُ | اللّٰهُ | وَ نَسُوْهُ ؕ | وَاللّٰهُ | عَلٰى | كُلِّ | شَيْءٍ |
| उन्होंने अमल किए | गिन रखा है उसे | अल्लाह ने | जब कि वो भूल चुके हैं उसे | और अल्लाह | ऊपर | हर | चीज़ के |

ع 1 6 1

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| شَهِيْدٌ ⑥ ع | اَلَمْ | تَرَ | اَنَّ | اللّٰهَ | يَعْلَمُ | مَا | فِي السَّمٰوٰتِ |
| गवाह है | क्या नहीं | आपने देखा | बेशक | अल्लाह | वो जानता है | जो कुछ | आसमानों में है |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| وَمَا | فِي الْاَرْضِ ؕ | مَا | يَكُوْنُ | مِنْ نَّجْوٰى | ثَلٰثَةٍ | اِلَّا | هُوَ |
| और जो कुछ | ज़मीन में है | नहीं | होती | कोई सरगोशी | तीन (लोगों) की | मगर | वो |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| رَابِعُهُمْ | وَلَا | خَمْسَةٍ | اِلَّا | هُوَ | سَادِسُهُمْ | وَلَآ | اَدْنٰى |
| चौथा है उनका | और ना | पांच (लोगों) की | मगर | वो | छठा है उनका | और ना | कम |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| مِنْ ذٰلِكَ | وَلَآ | اَكْثَرَ | اِلَّا | هُوَ | مَعَهُمْ | اَيْنَ مَا | كَانُوْا ۚ |
| उससे | और ना | ज़्यादा | मगर | वो | साथ है उनके | जहां कहीं | वो हों |

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ثُمَّ | يُنَبِّئُهُمْ | بِمَا | عَمِلُوْا | يَوْمَ | الْقِيٰمَةِ ؕ | اِنَّ | اللّٰهَ | بِكُلِّ |
| फिर | वो बताएगा उन्हें | जो | उन्होंने अमल किए | दिन | क़यामत के | बेशक | अल्लाह | हर |

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| شَيْءٍ | عَلِيْمٌ ⑦ | اَلَمْ | تَرَ | اِلَى | الَّذِيْنَ | نُهُوْا | عَنِ النَّجْوٰى |
| चीज़ को | ख़ूब जानने वाला है | क्या नहीं | आपने देखा | तरफ़ | उन लोगों के जो | रोके गए | सरगोशी से |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ثُمَّ | يَعُوْدُوْنَ | لِمَا | نُهُوْا | عَنْهُ | وَيَتَنٰجَوْنَ | بِالْاِثْمِ |
| फिर | वो लौटते हैं | तरफ़ उसके जो | वो रोके गए थे | जिससे | और वो बाहम सरगोशियां करते हैं | गुनाह की |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| وَالْعُدْوَانِ | وَمَعْصِيَتِ الرَّسُوْلِ ۫ | وَاِذَا | جَآءُوْكَ | حَيَّوْكَ |
| और ज़्यादती की | और रसूल की नाफ़रमानी की | और जब | वो आते हैं आपके पास | वो सलाम करते हैं आपको |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| بِمَا | لَمْ | يُحَيِّكَ | بِهِ | اللّٰهُ ۙ | وَيَقُوْلُوْنَ | فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ |
| साथ उसके जो | नहीं | सलाम कहा आपको | साथ उसके | अल्लाह ने | और वो कहते हैं | अपने नफ़्सों में |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| لَوْلَا | يُعَذِّبُنَا | اللّٰهُ | بِمَا | نَقُوْلُ ؕ | حَسْبُهُمْ | جَهَنَّمُ ۚ |
| क्यों नहीं | अज़ाब देता हमें | अल्लाह | बवजह उसके जो | हम कहते हैं | काफ़ी है उन्हें | जहन्नम |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| يَصْلَوْنَهَا ۚ | فَبِئْسَ | الْمَصِيْرُ ⑧ | يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ | اٰمَنُوْٓا | اِذَا |
| वो जलेंगे उसमें | पस कितनी बुरी है | लौटने की जगह | ऐ लोगो जो | ईमान लाए हो | जब |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| تَنَاجَيْتُمْ | فَلَا | تَتَنَاجَوْا | بِالْاِثْمِ | وَالْعُدْوَانِ | وَمَعْصِيَتِ الرَّسُوْلِ |
| तुम बाहम सरगोशियां करो | पस ना | तुम सरगोशियां करो | गुनाह की | और ज़्यादती की | और रसूल की नाफ़रमानी की |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَتَنَاجَوْا | بِالْبِرِّ | وَالتَّقْوٰى ؕ | وَاتَّقُوا | اللّٰهَ | الَّذِيْٓ | اِلَيْهِ |
| बल्कि सरगोशी करो | नेकी की | और तक़वा की | और डरो | अल्लाह से | वो जो | तरफ़ उसी के |

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| الَّذِيْنَ | لِيَحْزُنَ | مِنَ الشَّيْطٰنِ | النَّجْوٰى | اِنَّمَا | تُحْشَرُوْنَ ⑨ |
| उनको जो | ताकि वो ग़मगीन करे | शैतान की तरफ़ से है | सरगोशी | बेशक | तुम इकट्ठे किए जाओगे |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَعَلَى اللّٰهِ | بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ | اِلَّا | شَيْـًٔا | بِضَآرِّهِمْ | وَلَيْسَ | اٰمَنُوْا |
| और अल्लाह ही पर | अल्लाह के इज़्न से | मगर | कुछ भी | नुक़्सान देने वाला उन्हें | हालांकि नहीं वो | ईमान लाए |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| قِيْلَ | اِذَا | اٰمَنُوْٓا | يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ | الْمُؤْمِنُوْنَ ⑩ | فَلْيَتَوَكَّلِ |
| कहा जाए | जब | ईमान लाए हो | ऐ लोगो जो | मोमिन | पस चाहिए कि तवक्कुल करें |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| لَكُمْ ۚ | اللّٰهُ | يَفْسَحِ | فَافْسَحُوْا | فِى الْمَجٰلِسِ | تَفَسَّحُوْا | لَكُمْ |
| तुम्हारे लिए | अल्लाह | कुशादगी कर देगा | तो कुशादगी किया करो | मजलिसों में | कुशादगी करो | तुमसे |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| اٰمَنُوْا | الَّذِيْنَ | اللّٰهُ | يَرْفَعِ | فَانْشُزُوْا | انْشُزُوْا | قِيْلَ | وَاِذَا |
| ईमान लाए | उन लोगों को जो | अल्लाह | बुलंद करता है | तो उठ जाया करो | उठ जाओ | कहा जाए | और जब |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| بِمَا | وَاللّٰهُ | دَرَجٰتٍ ؕ | الْعِلْمَ | اُوْتُوا | وَالَّذِيْنَ | مِنْكُمْ ۙ |
| उससे जो | और अल्लाह | दरजात में | इल्म | दिए गए | और वो जो | तुम में से |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| الرَّسُوْلَ | نَاجَيْتُمُ | اِذَا | اٰمَنُوْٓا | يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ | خَبِيْرٌ ⑪ | تَعْمَلُوْنَ |
| रसूल से | सरगोशी करो तुम | जब | ईमान लाए हो | ऐ लोगो जो | ख़ूब बाख़बर है | तुम अमल करते हो |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| لَّكُمْ | خَيْرٌ | ذٰلِكَ | صَدَقَةً ؕ | نَجْوٰىكُمْ | بَيْنَ يَدَىْ | فَقَدِّمُوْا |
| तुम्हारे लिए | बेहतर है | ये | सदक़ा | अपनी सरगोशी के | पहले | तो पेश करो |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| رَّحِيْمٌ ⑫ | غَفُوْرٌ | اللّٰهَ | فَاِنَّ | تَجِدُوْا | لَّمْ | فَاِنْ | وَاَطْهَرُ ؕ |
| निहायत रहम करने वाला है | बहुत बख़्शने वाला है | अल्लाह | तो बेशक | तुम पाओ | ना | फिर अगर | और ज़्यादा पाकीज़ा |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| صَدَقٰتٍ ؕ | نَجْوٰىكُمْ | بَيْنَ يَدَىْ | تُقَدِّمُوْا | اَنْ | ءَاَشْفَقْتُمْ |
| सदक़ात | अपनी सरगोशी से | पहले | तुम पेश करो | कि | क्या डर गए तुम |

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| فَاِذْ | لَمْ | تَفْعَلُوْا | وَتَابَ | اللّٰهُ | عَلَيْكُمْ | فَاَقِيْمُوا | الصَّلٰوةَ |
| फिर जब | ना | तुमने किया | और मेहरबान हुआ | अल्लाह | तुम पर | तो क़ायम करो | नमाज़ |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| وَاٰتُوا | الزَّكٰوةَ | وَاَطِيْعُوا | اللّٰهَ | وَرَسُوْلَهٗ ؕ | وَاللّٰهُ | خَبِيْرٌۢ | بِمَا |
| और अदा करो | ज़कात | और इताअत करो | अल्लाह | और उसके रसूल की | और अल्लाह | ख़ूब बाख़बर है | उससे जो |

ع 2 7 2

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| تَعْمَلُوْنَ (13) ع | اَلَمْ | تَرَ | اِلَى | الَّذِيْنَ | تَوَلَّوْا | قَوْمًا | غَضِبَ |
| तुम अमल करते हो | क्या नहीं | आपने देखा | तरफ़ | उन लोगों के जिन्होंने | दोस्त बनाया | एक क़ौम को | ग़ज़बनाक हुआ |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| اللّٰهُ | عَلَيْهِمْ ؕ | مَا | هُمْ | مِّنْكُمْ | وَلَا | مِنْهُمْ ۙ | وَيَحْلِفُوْنَ |
| अल्लाह | उन पर | नहीं | वो | तुम में से | और ना | उनमें से | और वो क़समें खाते हैं |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| عَلَى الْكَذِبِ | وَهُمْ | يَعْلَمُوْنَ (14) | اَعَدَّ | اللّٰهُ | لَهُمْ | عَذَابًا |
| झूठ पर | हालांकि वो | वो जानते हैं | तैयार कर रखा है | अल्लाह ने | उनके लिए | अज़ाब |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| شَدِيْدًا ؕ | اِنَّهُمْ | سَآءَ | مَا | كَانُوْا | يَعْمَلُوْنَ (15) | اِتَّخَذُوْٓا |
| सख़्त | बेशक वो | कितना बुरा है | जो | हैं वो | वो अमल करते | उन्होंने बना लिया |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| اَيْمَانَهُمْ | جُنَّةً | فَصَدُّوْا | عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ | فَلَهُمْ | عَذَابٌ |
| अपनी क़समों को | ढाल | फिर उन्होंने रोका | अल्लाह के रास्ते से | पस उनके लिए | अज़ाब है |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| مُّهِيْنٌ (16) | لَنْ | تُغْنِيَ | عَنْهُمْ | اَمْوَالُهُمْ | وَلَآ | اَوْلَادُهُمْ |
| रुस्वा करने वाला | हरगिज़ ना | काम आएंगे | उन्हें | माल उनके | और ना | औलाद उनकी |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| مِّنَ اللّٰهِ | شَيْـًٔا ؕ | اُولٰٓئِكَ | اَصْحٰبُ | النَّارِ ؕ | هُمْ | فِيْهَا | خٰلِدُوْنَ (17) |
| अल्लाह से | कुछ भी | यही लोग हैं | साथी | आग के | वो | उसमें | हमेशा रहने वाले हैं |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| يَوْمَ | يَبْعَثُهُمُ | اللّٰهُ | جَمِيْعًا | فَيَحْلِفُوْنَ | لَهٗ | كَمَا | يَحْلِفُوْنَ |
| जिस दिन | उठाएगा उन्हें | अल्लाह | सब के सब को | फिर वो क़समें खाऐंगे | उसके सामने | जैसा कि | वो क़समें खाते हैं |

AL-HUDA INT' RNATIONL WELFARE FOUNDATIO

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| لَكُمْ | وَيَحْسَبُوْنَ | اَنَّهُمْ | عَلٰى | شَيْءٍ ؕ | اَلَآ | اِنَّهُمْ | هُمُ |
| तुम्हारे सामने | और वो समझते हैं | बेशक वो | ऊपर | एक चीज़ के हैं | ख़बरदार | बेशक वो | वो ही |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| الْكٰذِبُوْنَ ﴿18﴾ | اِسْتَحْوَذَ | عَلَيْهِمُ | الشَّيْطٰنُ | فَاَنْسٰهُمْ | ذِكْرَ | اللّٰهِ ؕ |
| झूठे हैं | ग़लबा पा लिया | उन पर | शैतान ने | तो उसने भुला दिया उन्हें | ज़िक्र | अल्लाह का |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| اُولٰٓئِكَ | حِزْبُ | الشَّيْطٰنِ ؕ | اَلَآ | اِنَّ | حِزْبَ | الشَّيْطٰنِ | هُمُ |
| यही लोग हैं | गिरोह | शैतान का | ख़बरदार | बेशक | गिरोह | शैतान का | वही हैं |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| الْخٰسِرُوْنَ ﴿19﴾ | اِنَّ | الَّذِيْنَ | يُحَآدُّوْنَ | اللّٰهَ | وَرَسُوْلَهٗٓ | اُولٰٓئِكَ |
| जो ख़सारा पाने वाले हैं | बेशक | वो लोग जो | मुख़ालिफ़त करते हैं | अल्लाह की | और उसके रसूल की | यही लोग हैं |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| فِى الْاَذَلِّيْنَ ﴿20﴾ | كَتَبَ | اللّٰهُ | لَاَغْلِبَنَّ | اَنَا | وَرُسُلِىْ ؕ | اِنَّ |
| ज़लील तरीन (मख़लूक़) में | लिख दिया | अल्लाह ने | अलबत्ता मैं ज़रूर ग़ालिब रहूंगा | मैं | और मेरे रसूल | बेशक |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اللّٰهَ | قَوِىٌّ | عَزِيْزٌ ﴿21﴾ | لَا تَجِدُ | قَوْمًا | يُّؤْمِنُوْنَ | بِاللّٰهِ |
| अल्लाह | बहुत क़ुव्वत वाला है | बहुत ज़बरदस्त है | ना आप पाऐंगे | उन लोगों को | जो ईमान रखते हों | अल्लाह पर |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ | يُوَآدُّوْنَ | مَنْ | حَآدَّ | اللّٰهَ | وَرَسُوْلَهٗ | وَلَوْ |
| और आख़िरी दिन पर | कि वो दोस्ती रखते हों | उनसे जिन्होंने | मुख़ालिफ़त की | अल्लाह की | और उसके रसूल की | और अगरचे |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| كَانُوْٓا | اٰبَآءَهُمْ | اَوْ | اَبْنَآءَهُمْ | اَوْ | اِخْوَانَهُمْ | اَوْ | عَشِيْرَتَهُمْ ؕ |
| हों वो | बाप उनके | या | बेटे उनके | या | भाई उनके | या | क़बीला उनका |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| اُولٰٓئِكَ | كَتَبَ | فِىْ قُلُوْبِهِمُ | الْاِيْمَانَ | وَاَيَّدَهُمْ | بِرُوْحٍ |
| यही लोग हैं | उसने लिख दिया | उनके दिलों में | ईमान | और उसने ताईद की उनकी | साथ रूह के |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| مِّنْهُ ؕ | وَيُدْخِلُهُمْ | جَنّٰتٍ | تَجْرِىْ | مِنْ تَحْتِهَا | الْاَنْهٰرُ | خٰلِدِيْنَ |
| अपनी तरफ़ से | और वो दाख़िल करेगा उन्हें | बाग़ात में | बहती हैं | उनके नीचे से | नहरें | हमेशा रहने वाले हैं |

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| فِيْهَا ؕ | رَضِيَ | اللّٰهُ | عَنْهُمْ | وَرَضُوْا | عَنْهُ ؕ | اُولٰٓئِكَ | حِزْبُ |
| उनमें | राज़ी हो गया | अल्लाह | उनसे | और वो राज़ी हो गए | उससे | यही लोग हैं | गिरोह |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اللّٰهِ ؕ | اَلَآ | اِنَّ | حِزْبَ | اللّٰهِ | هُمُ | الْمُفْلِحُوْنَ ﴿22﴾ ع |
| अल्लाह का | ख़बरदार | बेशक | गिरोह | अल्लाह का | वो ही हैं | जो फ़लाह पाने वाले हैं |

ع 3 9 3

## سُوْرَةُ الْحَشْرِ مَدَنِيَّةٌ 101 — 59

اٰيَاتُهَا: 24 — رُكُوْعَاتُهَا: 3

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَهُوَ | فِي الْاَرْضِ ۚ | وَمَا | فِي السَّمٰوٰتِ | مَا | لِلّٰهِ | سَبَّحَ |
| और वो ही है | ज़मीन में है | और जो | आसमानों में है | उस चीज़ ने जो | अल्लाह के लिए | तस्बीह की है |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| الْعَزِيْزُ | الْحَكِيْمُ ﴿1﴾ | هُوَ | الَّذِيْٓ | اَخْرَجَ | الَّذِيْنَ | كَفَرُوْا |
| बहुत ज़बरदस्त | ख़ूब हिकमत वाला | वो ही है | जिसने | निकाल दिया | उन लोगों को जिन्होंने | कुफ़्र किया |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ | مِنْ دِيَارِهِمْ | لِاَوَّلِ الْحَشْرِ ؕ | مَا | ظَنَنْتُمْ | اَنْ |
| अहले किताब में से | उनके घरों से | पहले हशर/इकट्ठ में | नहीं | गुमान किया तुमने | कि |

وقف النبی ﷺ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| يَّخْرُجُوْا | وَظَنُّوْٓا | اَنَّهُمْ | مَّانِعَتُهُمْ | حُصُوْنُهُمْ | مِّنَ اللّٰهِ |
| वो निकल जाऐंगे | और वो समझ रहे थे | कि बेशक वो | बचाने वाले है उन्हें | क़िले उनके | अल्लाह से |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| فَاَتٰىهُمُ | اللّٰهُ | مِنْ حَيْثُ | لَمْ | يَحْتَسِبُوْا ۗ | وَقَذَفَ | فِيْ قُلُوْبِهِمُ |
| पस आया उनके पास | अल्लाह | जहां से | नहीं | उन्होंने गुमान किया | और उसने डाल दिया | उनके दिलों में |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| الرُّعْبَ | يُخْرِبُوْنَ | بُيُوْتَهُمْ | بِاَيْدِيْهِمْ | وَاَيْدِي | الْمُؤْمِنِيْنَ ۗ |
| रौब | वो बर्बाद कर रहे थे | अपने घरों को | अपने हाथों से | और हाथों से | मोमिनों के |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| فَاعْتَبِرُوْا | يٰٓاُولِي الْاَبْصَارِ ﴿2﴾ | وَلَوْلَآ | اَنْ | كَتَبَ | اللّٰهُ | عَلَيْهِمُ |
| पस इबरत पकड़ो | ऐ आंखों वालो | और अगर ना होती | ये बात कि | लिख दी | अल्लाह ने | उन पर |

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| عَذَابٌ | فِي الْاٰخِرَةِ | وَلَهُمْ | فِي الدُّنْيَا ؕ | لَعَذَّبَهُمْ | الْجَلَآءَ |
| अज़ाब है | आख़िरत में | और उनके लिए | दुनिया में | अलबत्ता वो अज़ाब देता उन्हें | जिला वतनी |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَمَنْ | وَرَسُوْلَهٗ ج | اللّٰهَ | شَآقُّوا | بِاَنَّهُمْ | ذٰلِكَ | النَّارِ (3) |
| और जो | और उसके रसूल की | अल्लाह की | उन्होंने मुख़ालिफ़त की | बवजह उसके कि वो | ये | आग का |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| قَطَعْتُمْ | مَا | الْعِقَابِ (4) | شَدِيْدُ | اللّٰهَ | فَاِنَّ | اللّٰهَ | يُّشَآقِّ |
| काटा तुमने | जो भी | सज़ा वाला है | सख़्त | अल्लाह | तो बेशक | अल्लाह की | मुख़ालिफ़त करेगा |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| فَبِاِذْنِ اللّٰهِ | عَلٰٓى اُصُوْلِهَا | قَآئِمَةً | تَرَكْتُمُوْهَا | اَوْ | مِّنْ لِّيْنَةٍ |
| तो अल्लाह के इज़्न से था | उसकी जड़ों पर | खड़ा | तुमने उसे छोड़ दिया | या | खजूर का दरख़्त |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| مِنْهُمْ | عَلٰى رَسُوْلِهٖ | اللّٰهُ | اَفَآءَ | وَمَآ | الْفٰسِقِيْنَ (5) | وَلِيُخْزِيَ |
| उनमें से | अपने रसूल पर | अल्लाह ने | लौटाया | और जो | फ़ासिक़ों को | और ताकि वो रुस्वा करे |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| اللّٰهَ | وَّلٰكِنَّ | رِكَابٍ | وَّلَا | مِنْ خَيْلٍ | عَلَيْهِ | اَوْجَفْتُمْ | فَمَآ |
| अल्लाह | और लेकिन | ऊंट | और ना | कोई घोड़े | उस पर | दौड़ाए तुमने | पस नहीं |

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| شَيْءٍ | كُلِّ | عَلٰى | وَاللّٰهُ | يَّشَآءُ ؕ | مَنْ | عَلٰى | رُسُلَهٗ | يُسَلِّطُ |
| चीज़ के | हर | ऊपर | और अल्लाह | वो चाहता है | जिसके | ऊपर | अपने रसूलों को | वो मुसल्लत करता है |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| فَلِلّٰهِ | مِنْ اَهْلِ الْقُرٰى | عَلٰى رَسُوْلِهٖ | اللّٰهُ | اَفَآءَ | مَآ | قَدِيْرٌ (6) |
| पस अल्लाह के लिए है | बस्ती वालों में से | अपने रसूल पर | अल्लाह ने | लौटाया | जो | ख़ूब क़ुदरत रखने वाला है |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| وَابْنِ السَّبِيْلِ ۙ | وَالْمَسٰكِيْنِ | وَالْيَتٰمٰى | وَلِذِي الْقُرْبٰى | وَلِلرَّسُوْلِ |
| और मुसाफ़िरों के लिए | और मिस्कीनों | और यतीमों | और क़राबतदारों के लिए | और रसूल के लिए |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| اٰتٰىكُمُ | وَمَآ | مِنْكُمْ ؕ | الْاَغْنِيَآءِ | بَيْنَ | دُوْلَةًۢ | يَكُوْنَ | كَيْ لَا |
| दें तुम्हें | और जो | तुम में से | दौलतमंदों के | दर्मियान | गर्दिश करने वाला | हो वो | ताकि ना |

© AL-HUDA INT'L WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| الرَّسُوْلُ | فَخُذُوْهُ ق | وَمَا | نَهٰىكُمْ | عَنْهُ | فَانْتَهُوْا ج | وَاتَّقُوا | اللّٰهَ ط |
| रसूल | पस ले लो उसे | और जिस चीज़ से | वो रोकें तुम्हें | उससे | पस रुक जाओ | और डरो | अल्लाह से |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اِنَّ | اللّٰهَ | شَدِيْدُ | الْعِقَابِ ⑦ | لِلْفُقَرَآءِ | الْمُهٰجِرِيْنَ | الَّذِيْنَ |
| बेशक | अल्लाह | सख़्त | सज़ा वाला है | (माल फ़ै) फ़ुक़रा के लिए है | जो मुहाजिर हैं | वो लोग जो |

وقف لازم

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| اُخْرِجُوْا | مِنْ دِيَارِهِمْ | وَاَمْوَالِهِمْ | يَبْتَغُوْنَ | فَضْلًا | مِّنَ اللّٰهِ |
| निकाले गए | अपने घरों से | और अपने मालों से | वो चाहते हैं | फ़ज़्ल | अल्लाह का |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَرِضْوَانًا | وَّيَنْصُرُوْنَ | اللّٰهَ | وَرَسُوْلَهٗ ط | اُولٰٓئِكَ | هُمُ | الصّٰدِقُوْنَ ⑧ ج |
| और रज़ामंदी | और वो मदद करते हैं | अल्लाह की | और उसके रसूल की | यही लोग हैं | वो | जो सच्चे हैं |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| وَالَّذِيْنَ | تَبَوَّءُو | الدَّارَ | وَالْاِيْمَانَ | مِنْ قَبْلِهِمْ | يُحِبُّوْنَ |
| और(अंसार के लिए भी)जिन्होंने | जगह बनाई | उस घर (मदीना) में | और ईमान में | उनसे पहले | वो मोहब्बत रखते हैं |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| مَنْ | هَاجَرَ | اِلَيْهِمْ | وَلَا | يَجِدُوْنَ | فِيْ صُدُوْرِهِمْ | حَاجَةً | مِّمَّآ |
| उससे जो | हिजरत करे | तरफ़ उनके | और नहीं | वो पाते | अपने सीनों में | कोई हाजत | उस चीज़ की जो |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| اُوْتُوْا | وَيُؤْثِرُوْنَ | عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ | وَلَوْ | كَانَ | بِهِمْ | خَصَاصَةٌ ط ق |
| वो दिए गए | और वो तरजीह देते हैं | अपने नफ़्सों पर | और अगरचे | हो | उन्हें | सख़्त हाजत |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَمَنْ | يُّوْقَ | شُحَّ | نَفْسِهٖ | فَاُولٰٓئِكَ | هُمُ | الْمُفْلِحُوْنَ ⑨ ج |
| और जो कोई | बचा लिया गया | बुख़्ल से | अपने नफ़्स के | तो यही लोग हैं | वो | जो फ़लाह पाने वाले हैं |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَالَّذِيْنَ | جَآءُوْ | مِنْۢ بَعْدِهِمْ | يَقُوْلُوْنَ | رَبَّنَا | اغْفِرْ | لَنَا |
| और (उनके लिए भी) जो | आए | उनके बाद | वो कहते हैं | ऐ हमारे रब | बख़्श दे | हमें |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَلِاِخْوَانِنَا | الَّذِيْنَ | سَبَقُوْنَا | بِالْاِيْمَانِ | وَلَا | تَجْعَلْ | فِيْ قُلُوْبِنَا |
| और हमारे भाईयों को | वो जो | सबक़त ले गए हमसे | ईमान में | और ना | तू रख | हमारे दिलों में |

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

ع 1 10 4

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| غِلًّا | لِّلَّذِيْنَ | اٰمَنُوْا | رَبَّنَآ | اِنَّكَ | رَءُوْفٌ | رَّحِيْمٌ ⑩ ع |
| कीना / कुदूरत | उन लोगों के लिए जो | ईमान लाए | ऐ हमारे रब | बेशक तू | बहुत शफ़क़त करने वाला है | निहायत रहम करने वाला है |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اَلَمْ | تَرَ | اِلَى الَّذِيْنَ | نَافَقُوْا | يَقُوْلُوْنَ | لِاِخْوَانِهِمُ | الَّذِيْنَ |
| क्या नहीं | आपने देखा | तरफ़ उनके जिन्होंने | मुनाफ़िक़त की | वो कहते हैं | अपने उन भाईयों से | जिन्होंने |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| كَفَرُوْا | مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ | لَئِنْ | اُخْرِجْتُمْ | لَنَخْرُجَنَّ | مَعَكُمْ | وَلَا |
| कुफ़्र किया | अहले किताब में से | अलबत्ता अगर | निकाले गए तुम | अलबत्ता हम ज़रूर निकलेंगे | साथ तुम्हारे | और ना |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| نُطِيْعُ | فِيْكُمْ | اَحَدًا | اَبَدًا ۙ | وَّاِنْ | قُوْتِلْتُمْ | لَنَنْصُرَنَّكُمْ ؕ |
| हम इताअत करेंगे | तुम्हारे मामले में | किसी एक की | कभी भी | और अगर | जंग की गई तुमसे | अलबत्ता हम ज़रूर मदद करेंगे तुम्हारी |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَاللّٰهُ | يَشْهَدُ | اِنَّهُمْ | لَكٰذِبُوْنَ ⑪ | لَئِنْ | اُخْرِجُوْا | لَا يَخْرُجُوْنَ |
| और अल्लाह | वो गवाही देता है | बेशक वो | अलबत्ता झूठे हैं | अलबत्ता अगर | वो निकाले गए | नहीं वो निकलेंगे |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| مَعَهُمْ ۚ | وَلَئِنْ | قُوْتِلُوْا | لَا يَنْصُرُوْنَهُمْ ۚ | وَلَئِنْ | نَّصَرُوْهُمْ |
| साथ उनके | और अलबत्ता अगर | वो जंग किए गए | नहीं वो मदद करेंगे उनकी | और अलबत्ता अगर | उन्होंने मदद की भी उनकी |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| لَيُوَلُّنَّ | الْاَدْبَارَ ۫ | ثُمَّ | لَا يُنْصَرُوْنَ ⑫ | لَاَنْتُمْ | اَشَدُّ | رَهْبَةً |
| अलबत्ता वो ज़रूर फेर लेंगे | पुश्तें | फिर | ना वो मदद किए जाऐंगे | अलबत्ता तुम | ज़्यादा सख़्त हो | रौब में |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| فِيْ صُدُوْرِهِمْ | مِّنَ اللّٰهِ ؕ | ذٰلِكَ | بِاَنَّهُمْ | قَوْمٌ | لَّا يَفْقَهُوْنَ ⑬ |
| उनके सीनों में | अल्लाह से (बढ़) कर | ये | बवजह उसके कि वो | एक क़ौम हैं | नहीं वो समझते |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| لَا يُقَاتِلُوْنَكُمْ | جَمِيْعًا | اِلَّا | فِيْ قُرًى | مُّحَصَّنَةٍ | اَوْ | مِنْ وَّرَآءِ |
| नहीं वो जंग करेंगे तुम से | इकट्ठे | मगर | बस्तियों में | क़िला बंद हो कर | या | पीछे से |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| جُدُرٍ ؕ | بَاْسُهُمْ | بَيْنَهُمْ | شَدِيْدٌ ؕ | تَحْسَبُهُمْ | جَمِيْعًا | وَّقُلُوْبُهُمْ |
| दीवारों के | उनकी जंग | आपस में | शदीद है | तुम समझते हो उन्हें | इकट्ठा | जबकि दिल उनके |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| شَتّٰى ؕ | ذٰلِكَ | بِاَنَّهُمْ | قَوْمٌ | لَّا يَعْقِلُوْنَ ﴿14﴾ ۚ | كَمَثَلِ | الَّذِيْنَ |
| फटे हुए हैं | ये | बवजह उसके कि वो | एक क़ौम हैं | नहीं वो अक़्ल रखते | मानिंद मिसाल | उनके जो |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| مِنْ قَبْلِهِمْ | قَرِيْبًا | ذَاقُوْا | وَبَالَ | اَمْرِهِمْ ۚ | وَلَهُمْ | عَذَابٌ |
| उनसे पहले थे | क़रीब ही | उन्होंने चखा | वबाल | अपने काम का | और उनके लिए है | अज़ाब |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| اَلِيْمٌ ﴿15﴾ ۚ | كَمَثَلِ | الشَّيْطٰنِ | اِذْ | قَالَ | لِلْاِنْسَانِ | اكْفُرْ ۚ | فَلَمَّا |
| दर्दनाक | जैसे मिसाल | शैतान की | जब | वो कहता है | इन्सान से | कुफ़्र करो | तो जब |

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| كَفَرَ | قَالَ | اِنِّيْ | بَرِيْٓءٌ | مِّنْكَ | اِنِّيْٓ | اَخَافُ | اللّٰهَ | رَبَّ |
| वो कुफ़्र करता है | वो कहता है | बेशक मैं | बरी उज़ ज़िम्मा हूं | तुझसे | बेशक मैं | मैं डरता हूं | अल्लाह से | जो रब है |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| الْعٰلَمِيْنَ ﴿16﴾ | فَكَانَ | عَاقِبَتَهُمَآ | اَنَّهُمَا | فِى النَّارِ | خَالِدَيْنِ | فِيْهَا ؕ |
| तमाम जहानों का | पस हुआ | अंजाम उन दोनों का | बेशक वो दोनों | आग में होंगे | दोनों हमेशा रहने वाले | उस में |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَذٰلِكَ | جَزٰٓؤُا | الظّٰلِمِيْنَ ﴿17﴾ ع | يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ | اٰمَنُوا | اتَّقُوا | اللّٰهَ |
| और यही है | बदला | ज़ालिमों का | ऐ लोगो जो | ईमान लाए हो | डरो | अल्लाह से |

ع 2 7 5

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| وَلْتَنْظُرْ | نَفْسٌ | مَّا | قَدَّمَتْ | لِغَدٍ ۚ | وَاتَّقُوا | اللّٰهَ ؕ | اِنَّ | اللّٰهَ |
| और ज़रूर देखे | हर नफ़्स | जो | उसने आगे भेजा | कल के लिए | और डरो | अल्लाह से | बेशक | अल्लाह |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| خَبِيْرٌۢ | بِمَا | تَعْمَلُوْنَ ﴿18﴾ | وَلَا | تَكُوْنُوْا | كَالَّذِيْنَ | نَسُوا | اللّٰهَ |
| ख़ूब बाख़बर है | उससे जो | तुम अमल करते हो | और ना | तुम हो जाओ | उनकी तरह जिन्होंने | भुला दिया | अल्लाह को |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| فَاَنْسٰىهُمْ | اَنْفُسَهُمْ ؕ | اُولٰٓئِكَ | هُمُ | الْفٰسِقُوْنَ ﴿19﴾ | لَا يَسْتَوِيْٓ |
| तो उसने भुलवा दिए उन्हें | उनके नफ़्स | यही लोग हैं | वो | जो फ़ासिक़ हैं | नहीं बराबर हो सकते |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اَصْحٰبُ | النَّارِ | وَاَصْحٰبُ | الْجَنَّةِ ؕ | اَصْحٰبُ | الْجَنَّةِ | هُمُ |
| साथी | आग के | और साथी | जन्नत के | साथी | जन्नत के | वो ही हैं |

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| الْفَآئِزُوْنَ (20) | لَوْ | اَنْزَلْنَا | هٰذَا | الْقُرْاٰنَ | عَلٰى جَبَلٍ | لَّرَاَيْتَهٗ |
| जो कामयाब होने वाले हैं | अगर | नाज़िल करते हम | इस | क़ुरआन को | किसी पहाड़ पर | अलबत्ता देखते आप उसे |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| خَاشِعًا | مُّتَصَدِّعًا | مِّنْ خَشْيَةِ | اللّٰهِ ؕ | وَتِلْكَ | الْاَمْثَالُ | نَضْرِبُهَا |
| दबा हुआ | फटने वाला | ख़ौफ़ से | अल्लाह के | और ये | मिसालें हैं | हम बयान करते हैं उन्हें |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| لِلنَّاسِ | لَعَلَّهُمْ | يَتَفَكَّرُوْنَ (21) | هُوَ | اللّٰهُ | الَّذِىْ | لَآ | اِلٰهَ |
| लोगों के लिए | ताकि वो | वो ग़ौरो फ़िक्र करें | वो | अल्लाह | वो ही है जो | नहीं | कोई इलाह (बरहक़) |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| اِلَّا | هُوَ ۚ | عٰلِمُ | الْغَيْبِ | وَالشَّهَادَةِ ۚ | هُوَ | الرَّحْمٰنُ | الرَّحِيْمُ (22) |
| मगर | वो ही | जानने वाला है | ग़ैब | और हाज़िर का | वो | बहुत मेहरबान है | निहायत रहम करने वाला है |

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| هُوَ | اللّٰهُ | الَّذِىْ | لَآ | اِلٰهَ | اِلَّا | هُوَ ۚ | اَلْمَلِكُ | الْقُدُّوْسُ |
| वो | अल्लाह | वो ही है जो | नहीं | कोई इलाह (बरहक़) | मगर | वो ही | जो बादशाह है | निहायत पाक है |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| السَّلٰمُ | الْمُؤْمِنُ | الْمُهَيْمِنُ | الْعَزِيْزُ | الْجَبَّارُ | الْمُتَكَبِّرُ ؕ |
| सलामती वाला है | अमन देने वाला है | निगहबान है | सब पर ग़ालिब है | ज़बरदस्त ज़ोर आवर है | बेहद बड़ाई वाला है |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| سُبْحٰنَ | اللّٰهِ | عَمَّا | يُشْرِكُوْنَ (23) | هُوَ | اللّٰهُ | الْخَالِقُ | الْبَارِئُ |
| पाक है | अल्लाह | उससे जो | वो शरीक ठहराते हैं | वो | अल्लाह | जो पैदा करने वाला है | वुजूद में लाने वाला है |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| الْمُصَوِّرُ | لَهُ | الْاَسْمَآءُ | الْحُسْنٰى ؕ | يُسَبِّحُ | لَهٗ | مَا |
| सूरत बनाने वाला है | उसी के लिए हैं | नाम | अच्छे-अच्छे | तस्बीह करती है | उसके लिए | (हर वो चीज़) जो |

ع 3 7 6

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| فِى السَّمٰوٰتِ | وَالْاَرْضِ ۚ | وَهُوَ | الْعَزِيْزُ | الْحَكِيْمُ (24) ع |
| आसमानों में | और ज़मीन में है | और वो | बहुत ज़बरदस्त है | ख़ूब हिक्मत वाला है |

اٰيَاتُهَا: 13 — 60 سُوْرَةُ الْمُمْتَحِنَةِ مَدَنِيَّةٌ 91 — رُكُوْعَاتُهَا: 2

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

AL-HUDA INT'NATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| اَوْلِيَآءَ | وَعَدُوَّكُمْ | عَدُوِّىْ | لَا تَتَّخِذُوْا | اٰمَنُوْا | يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ |
| दोस्त | और अपने दुश्मनों को | मेरे दुश्मनों | ना तुम बनाओ | ईमान लाए हो | ऐ लोगो जो |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| جَآءَكُمْ | بِمَا | كَفَرُوْا | وَقَدْ | بِالْمَوَدَّةِ | اِلَيْهِمْ | تُلْقُوْنَ |
| आया तुम्हारे पास | उसका जो | उन्होंने इंकार किया | हालांकि तहक़ीक़ | दोस्ती (का पैग़ाम) | तरफ़ उनके | तुम डालते हो |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| بِاللّٰهِ | تُؤْمِنُوْا | اَنْ | وَاِيَّاكُمْ | الرَّسُوْلَ | يُخْرِجُوْنَ | مِّنَ الْحَقِّ ج |
| अल्लाह पर | तुम ईमान लाए हो | कि | और तुम्हें | रसूल को | वो निकालते हैं | हक़ में से |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَابْتِغَآءَ | فِىْ سَبِيْلِىْ | جِهَادًا | خَرَجْتُمْ | كُنْتُمْ | اِنْ | رَبِّكُمْ ط |
| और चाहने को | मेरे रास्ते में | जिहाद के लिए | निकले तुम | हो तुम | अगर | जो रब है तुम्हारा |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| بِمَآ | اَعْلَمُ | وَاَنَا | بِالْمَوَدَّةِ ۖق | اِلَيْهِمْ | تُسِرُّوْنَ | مَرْضَاتِىْ ۖق |
| उसे जो | ख़ूब जानता हूं | और मैं | दोस्ती (का पैग़ाम) | तरफ़ उनके | तुम छुपा कर भेजते हो | रज़ामंदी मेरी |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ضَلَّ | فَقَدْ | مِنْكُمْ | يَّفْعَلْهُ | وَمَنْ | اَعْلَنْتُمْ ط | وَمَآ | اَخْفَيْتُمْ |
| वो भटक गया | तो तहक़ीक़ | तुम में से | करेगा उसे | और जो कोई | ज़ाहिर किया तुमने | और जो | छुपाया तुमने |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اَعْدَآءً | لَكُمْ | يَكُوْنُوْا | يَّثْقَفُوْكُمْ | اِنْ | السَّبِيْلِ (1) | سَوَآءَ |
| दुश्मन | तुम्हारे | होंगे वो | वो पा लें तुम्हें | अगर | रास्ते से | सीधे |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| لَوْ | وَوَدُّوْا | بِالسُّوْٓءِ | وَاَلْسِنَتَهُمْ | اَيْدِيَهُمْ | اِلَيْكُمْ | وَّيَبْسُطُوْٓا |
| काश | और वो चाहेंगे | साथ बुराई के | और ज़बानें अपनी | हाथ अपने | तरफ़ तुम्हारे | और वो दराज़ करेंगे |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| يَوْمَ | اَوْلَادُكُمْ ۚ | وَلَآ | اَرْحَامُكُمْ | تَنْفَعَكُمْ | لَنْ | تَكْفُرُوْنَ (2) ط |
| दिन | औलाद तुम्हारी | और ना | रिश्तेदारियां तुम्हारी | फ़ायदा देंगी तुम्हें | हरगिज़ नहीं | तुम कुफ़्र करो |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| قَدْ | بَصِيْرٌ (3) | تَعْمَلُوْنَ | بِمَا | وَاللّٰهُ | بَيْنَكُمْ ط | يَفْصِلُ | الْقِيٰمَةِ ۚ |
| तहक़ीक़ | ख़ूब देखने वाला है | तुम अमल करते हो | उसे जो | और अल्लाह | दर्मियान तुम्हारे | वो फ़ैसला करेगा | क़यामत के |

معانقة 16 السباع الوقف علی القیمة 12

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| كَانَتْ | لَكُمْ | اُسْوَةٌ | حَسَنَةٌ | فِيْٓ اِبْرٰهِيْمَ | وَالَّذِيْنَ | مَعَهٗ ۚ |
| है | तुम्हारे लिए | नमूना | अच्छा | इब्राहीम में | और उन लोगों में जो | उसके साथ थे |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| اِذْ | قَالُوْا | لِقَوْمِهِمْ | اِنَّا | بُرَءٰٓؤُا | مِنْكُمْ | وَمِمَّا | تَعْبُدُوْنَ |
| जब | उन्होंने कहा | अपनी क़ौम से | बेशक हम | बेज़ार हैं | तुम से | और उनसे जिन्हें | तुम पूजते हो |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| مِنْ دُوْنِ | اللّٰهِ ۖ | كَفَرْنَا | بِكُمْ | وَبَدَا | بَيْنَنَا | وَبَيْنَكُمُ | الْعَدَاوَةُ |
| सिवाए | अल्लाह के | इंकार किया हमने | तुम्हारा | और ज़ाहिर हो गई | दर्मियान हमारे | और दर्मियान तुम्हारे | अदावत |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| وَالْبَغْضَآءُ | اَبَدًا | حَتّٰى | تُؤْمِنُوْا | بِاللّٰهِ | وَحْدَهٗٓ | اِلَّا | قَوْلَ |
| और बुग़्ज़ | हमेशा के लिए | यहां तक कि | तुम ईमान लाओ | अल्लाह पर | अकेले उसी पर | मगर | कहना |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| اِبْرٰهِيْمَ | لِاَبِيْهِ | لَاَسْتَغْفِرَنَّ | لَكَ | وَمَآ | اَمْلِكُ | لَكَ | مِنَ اللّٰهِ |
| इब्राहीम का | अपने वालिद से | अलबत्ता मैं ज़रूर बख़्शिश मांगूँगा | तेरे लिए | और नहीं | मैं मालिक | तेरे लिए | अल्लाह से |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| مِنْ شَيْءٍ ؕ | رَبَّنَا | عَلَيْكَ | تَوَكَّلْنَا | وَاِلَيْكَ | اَنَبْنَا | وَاِلَيْكَ |
| किसी चीज़ का | ऐ हमारे रब | तुझ पर ही | तवक्कल किया हमने | और तरफ़ तेरे ही | रुजूअ किया हमने | और तरफ़ तेरे ही |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| الْمَصِيْرُ ④ | رَبَّنَا | لَا تَجْعَلْنَا | فِتْنَةً | لِّلَّذِيْنَ | كَفَرُوْا |
| लौटना है | ऐ हमारे रब | ना तू बना हमें | फ़ितना/आज़माइश | उनके लिए जिन्होंने | कुफ़्र किया |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| وَاغْفِرْ | لَنَا | رَبَّنَا ۚ | اِنَّكَ | اَنْتَ | الْعَزِيْزُ | الْحَكِيْمُ ⑤ | لَقَدْ |
| और बख़्श दे | हमें | ऐ हमारे रब | बेशक तू | तू ही है | बहुत ज़बरदस्त | ख़ूब हिक्मत वाला | अलबत्ता तहक़ीक़ |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| كَانَ | لَكُمْ | فِيْهِمْ | اُسْوَةٌ | حَسَنَةٌ | لِّمَنْ | كَانَ | يَرْجُوا |
| है | तुम्हारे लिए | उनमें | नमूना | अच्छा | उसके लिए जो | हो वो | वो उम्मीद रखता |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اللّٰهَ | وَالْيَوْمَ الْاٰخِرَ ؕ | وَمَنْ | يَّتَوَلَّ | فَاِنَّ | اللّٰهَ | هُوَ |
| अल्लाह (से मुलाक़ात) की | और आख़िरी दिन की | और जो कोई | मुंह मोड़ जाए | तो बेशक | अल्लाह | वो ही है |

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

ع 1 6 7

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| وَبَيْنَ | بَيْنَكُمْ | يَّجْعَلَ | اَنْ | اللّٰهُ | عَسَى | الْحَمِيْدُ ⑥ ع | الْغَنِيُّ |
| और दर्मियान | दर्मियान तुम्हारे | वो डाल दे | कि | अल्लाह | उम्मीद है | ख़ूब तारीफ़ वाला | बहुत बेनियाज़ |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَاللّٰهُ | قَدِيْرٌ ؕ | وَاللّٰهُ | مَّوَدَّةً ؕ | مِّنْهُمْ | عَادَيْتُمْ | الَّذِيْنَ |
| और अल्लाह | ख़ूब क़ुदरत रखने वाला है | और अल्लाह | दोस्ती | उनमें से | अदावत रखते हो तुम | उनके जिनसे |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| لَمْ | عَنِ الَّذِيْنَ | اللّٰهُ | لَا يَنْهٰكُمُ | رَّحِيْمٌ ⑦ | غَفُوْرٌ |
| नहीं | उन लोगों से | अल्लाह | नहीं रोकता तुम्हें | निहायत रहम करने वाला है | बहुत बख़्शने वाला है |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| اَنْ | مِّنْ دِيَارِكُمْ | يُخْرِجُوْكُمْ | وَلَمْ | فِي الدِّيْنِ | يُقَاتِلُوْكُمْ |
| कि | तुम्हारे घरों से | उन्होंने निकाला तुम्हें | और नहीं | दीन के मामले में | उन्होंने जंग की तुमसे |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| الْمُقْسِطِيْنَ ⑧ | يُحِبُّ | اللّٰهَ | اِنَّ | اِلَيْهِمْ ؕ | وَتُقْسِطُوْٓا | تَبَرُّوْهُمْ |
| इंसाफ़ करने वालों को | वो पसंद करता है | अल्लाह | बेशक | उनसे | और तुम इंसाफ़ करो | तुम नेकी करो उनसे |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَاَخْرَجُوْكُمْ | فِي الدِّيْنِ | قٰتَلُوْكُمْ | عَنِ الَّذِيْنَ | اللّٰهُ | يَنْهٰكُمُ | اِنَّمَا |
| और उन्होंने निकाला तुम्हें | दीन के मामले में | जंग की तुमसे | उनसे जिन्होंने | अल्लाह | रोकता है तुम्हें | बेशक |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| تَوَلَّوْهُمْ ۚ | اَنْ | عَلٰٓى اِخْرَاجِكُمْ | وَظٰهَرُوْا | مِّنْ دِيَارِكُمْ |
| तुम दोस्ती करो उनसे | कि | तुम्हारे निकालने पर | और उन्होंने एक दूसरे की मदद की | तुम्हारे घरों से |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ | الظّٰلِمُوْنَ ⑨ | هُمُ | فَاُولٰٓئِكَ | يَّتَوَلَّهُمْ | وَمَنْ |
| ऐ लोगो जो | जो ज़ालिम हैं | वो | तो यही लोग हैं | दोस्ती करेगा उनसे | और जो कोई |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اَللّٰهُ | فَامْتَحِنُوْهُنَّ ؕ | مُهٰجِرٰتٍ | الْمُؤْمِنٰتُ | جَآءَكُمُ | اِذَا | اٰمَنُوْٓا |
| अल्लाह | तो इम्तिहान लो उनका | हिजरत करने वालियां | मोमिन औरतें | आ जाऐं तुम्हारे पास | जब | ईमान लाए हो |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| فَلَا | تَرْجِعُوْهُنَّ | مُؤْمِنٰتٍ | عَلِمْتُمُوْهُنَّ | فَاِنْ | بِاِيْمَانِهِنَّ ۚ | اَعْلَمُ |
| तो ना | तुम लौटाओ उन्हें | ईमान वालियां | जान लो तुम उन्हें | फिर अगर | उनके ईमान को | ख़ूब जानता है |

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اِلَى الْكُفَّارِ ؕ | لَا هُنَّ | حِلٌّ | لَّهُمْ | وَلَا | هُمْ | يَحِلُّوْنَ |
| तरफ़ कुफ़्फ़ार के | ना वो | हलाल हैं | उनके लिए | और ना | वो | वो हलाल हो सकते हैं |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| لَهُنَّ ؕ | وَاٰتُوْهُمْ | مَّآ | اَنْفَقُوْا ؕ | وَلَا | جُنَاحَ | عَلَيْكُمْ | اَنْ |
| उनके लिए | और दो उन्हें | जो | उन्होंने ख़र्च किया | और नहीं | कोई गुनाह | तुम पर | कि |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| تَنْكِحُوْهُنَّ | اِذَآ | اٰتَيْتُمُوْهُنَّ | اُجُوْرَهُنَّ ؕ | وَلَا | تُمْسِكُوْا | بِعِصَمِ |
| तुम निकाह करो उनसे | जब | दे चुको तुम उन्हें | मेहर उनके | और ना | तुम रोक रखो | इस्मतें |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| الْكَوَافِرِ | وَسْـَٔلُوْا | مَآ | اَنْفَقْتُمْ | وَلْيَسْـَٔلُوْا | مَآ | اَنْفَقُوْا ؕ |
| काफ़िर औरतों की | और तुम मांग लो | जो | ख़र्च किया तुमने | और चाहिए कि वो मांग लें | जो | उन्होंने ख़र्च किया |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ذٰلِكُمْ | حُكْمُ | اللّٰهِ ؕ | يَحْكُمُ | بَيْنَكُمْ ؕ | وَاللّٰهُ | عَلِيْمٌ |
| ये | फ़ैसला है | अल्लाह का | वो फ़ैसला करता है | दर्मियान तुम्हारे | और अल्लाह | ख़ूब इल्म वाला है |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| حَكِيْمٌ ⑩ | وَاِنْ | فَاتَكُمْ | شَيْءٌ | مِّنْ اَزْوَاجِكُمْ | اِلَى الْكُفَّارِ |
| ख़ूब हिक्मत वाला है | और अगर | रह जाए तुमसे | कोई चीज़ (मेहर) | तुम्हारी बीवियों की | तरफ़ कुफ़्फ़ार के |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| فَعَاقَبْتُمْ | فَاٰتُوا | الَّذِيْنَ | ذَهَبَتْ | اَزْوَاجُهُمْ | مِّثْلَ | مَآ |
| फिर तुम्हारी बारी आए | तो दो | उन लोगों को | चली गईं | बीवियां जिनकी | मानिंद उसके | जो |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اَنْفَقُوْا ؕ | وَاتَّقُوا | اللّٰهَ | الَّذِيْٓ | اَنْتُمْ | بِهٖ | مُؤْمِنُوْنَ ⑪ | يٰٓاَيُّهَا |
| उन्होंने ख़र्च किया | और डरो | अल्लाह से | वो जो हो | तुम | उस पर | ईमान लाने वाले | ऐ |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| النَّبِيُّ | اِذَا | جَآءَكَ | الْمُؤْمِنٰتُ | يُبَايِعْنَكَ | عَلٰٓى | اَنْ |
| नबी | जब | आऐं आपके पास | मोमिन औरतें | वो बैत करें आपसे | इस (बात) पर | कि |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| لَّا يُشْرِكْنَ | بِاللّٰهِ | شَيْـًٔا | وَّلَا | يَسْرِقْنَ | وَلَا | يَزْنِيْنَ | وَلَا |
| नहीं वो शरीक ठहराऐंगी | साथ अल्लाह के | किसी चीज़ को | और ना | वो चोरी करेंगी | और ना | वो ज़िना करेंगी | और ना |

AHUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| أَيْدِيْهِنَّ | بَيْنَ | يَّفْتَرِيْنَهٗ | بِبُهْتَانٍ | يَّأْتِيْنَ | وَلَا | أَوْلَادَهُنَّ | يَقْتُلْنَ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपने हाथों | दर्मियान | वो गढ़ लें उसे | किसी बोहतान को | वो आऐंगी | और ना | अपनी औलाद को | वो क़त्ल करेंगी |

| وَاسْتَغْفِرْ | فَبَايِعْهُنَّ | فِيْ مَعْرُوْفٍ | يَعْصِيْنَكَ | وَلَا | وَأَرْجُلِهِنَّ |
|---|---|---|---|---|---|
| और बख़्शिश मांगिए | तो बैत कर लीजिए उनसे | किसी मारूफ़ में | वो नाफ़रमानी करेंगी आपकी | और ना | और अपने पांव के |

| يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ | رَّحِيْمٌ ⑫ | غَفُوْرٌ | اللّٰهَ | إِنَّ | اللّٰهَ ط | لَهُنَّ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ऐ लोगो जो | निहायत रहम करने वाला है | बहुत बख़्शने वाला है | अल्लाह | बेशक | अल्लाह से | उनके लिए |

| يَئِسُوْا | قَدْ | عَلَيْهِمْ | اللّٰهُ | غَضِبَ | قَوْمًا | لَا تَتَوَلَّوْا | اٰمَنُوْا |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वो मायूस हो गए | तहक़ीक़ | जिन पर | अल्लाह | नाराज़ हुआ | ऐसी क़ौम को | ना तुम दोस्त बनाओ | ईमान लाए हो |

| مِنْ اَصْحٰبِ الْقُبُوْرِ ⑬ ع | الْكُفَّارُ | يَئِسَ | كَمَا | مِنَ الْاٰخِرَةِ |
|---|---|---|---|---|
| क़ब्रों वालों से | काफ़िर | मायूस हुए | जैसा कि | आख़िरत से |

الصَّفّ ع 2 7 8

## اٰيَاتُهَا: 14 — 61 سُوْرَةُ الصَّفِّ مَدَنِيَّةٌ 109 — رُكُوْعَاتُهَا: 2

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

| وَهُوَ | فِي الْاَرْضِ ج | وَمَا | فِي السَّمٰوٰتِ | مَا | لِلّٰهِ | سَبَّحَ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और वो | ज़मीन में है | और जो | आसमानों में है | उस चीज़ ने जो | अल्लाह के लिए | तस्बीह की है |

| مَا | تَقُوْلُوْنَ | لِمَ | اٰمَنُوْا | يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ | الْحَكِيْمُ ① | الْعَزِيْزُ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| वो जो | तुम कहते हो | क्यों | ईमान लाए हो | ऐ लोगो जो | ख़ूब हिक्मत वाला है | बहुत ज़बरदस्त है |

| مَا | تَقُوْلُوْا | اَنْ | عِنْدَ اللّٰهِ | مَقْتًا | كَبُرَ | لَا تَفْعَلُوْنَ ② |
|---|---|---|---|---|---|---|
| वो जो | तुम कहो | कि | अल्लाह के नज़दीक | नाराज़गी | बड़ी है | नहीं तुम करते |

| فِيْ سَبِيْلِهٖ | يُقَاتِلُوْنَ | الَّذِيْنَ | يُحِبُّ | اللّٰهَ | اِنَّ | لَا تَفْعَلُوْنَ ③ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उसके रास्ते में | जंग करते हैं | उन लोगों से जो | मोहब्बत करता है | अल्लाह | बेशक | नहीं तुम करते |

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| صَفًّا | كَاَنَّهُمْ | بُنْيَانٌ | مَّرْصُوْصٌ ④ | وَاِذْ | قَالَ | مُوْسٰى | لِقَوْمِهٖ |
| सफ़ बनाकर | गोया कि वो | दीवार हैं | सीसा पिलाई हुई | और जब | कहा | मूसा ने | अपनी क़ौम से |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| يٰقَوْمِ | لِمَ | تُؤْذُوْنَنِيْ | وَقَدْ | تَّعْلَمُوْنَ | اَنِّيْ | رَسُوْلُ | اللّٰهِ |
| ऐ मेरी क़ौम | क्यों | तुम अज़ियत देते हो मुझे | हालांकि तहक़ीक़ | तुम जानते हो | बेशक मैं | रसूल हूं | अल्लाह का |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اِلَيْكُمْ ؕ | فَلَمَّا | زَاغُوْٓا | اَزَاغَ | اللّٰهُ | قُلُوْبَهُمْ ؕ | وَاللّٰهُ |
| तुम्हारी तरफ़ | फिर जब | वो टेढ़े हुए | टेढ़ा कर दिया | अल्लाह ने | उनके दिलों को | और अल्लाह |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| لَا يَهْدِي | الْقَوْمَ | الْفٰسِقِيْنَ ⑤ | وَاِذْ | قَالَ | عِيْسَى | ابْنُ مَرْيَمَ |
| नहीं वो हिदायत देता | उन लोगों को | जो फ़ासिक़ है | और जब | कहा | ईसा | इबने मरियम ने |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| يٰبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ | اِنِّيْ | رَسُوْلُ | اللّٰهِ | اِلَيْكُمْ | مُّصَدِّقًا | لِّمَا |
| ऐ बनी इस्राईल | बेशक मैं | रसूल हूं | अल्लाह का | तुम्हारी तरफ़ | तसदीक़ करने वाला हूं | उसकी जो |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| بَيْنَ يَدَيَّ | مِنَ التَّوْرٰىةِ | وَمُبَشِّرًا | بِرَسُوْلٍ | يَّاْتِيْ | مِنْۢ بَعْدِي |
| मुझसे पहले है | तौरात में से | और ख़ुशख़बरी देने वाला हूँ | एक रसूल की | जो आएगा | मेरे बाद |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| اسْمُهٗٓ | اَحْمَدُ ؕ | فَلَمَّا | جَآءَهُمْ | بِالْبَيِّنٰتِ | قَالُوْا | هٰذَا | سِحْرٌ |
| नाम उसका | अहमद (होगा) | फिर जब | वो आया उनके पास | साथ वाज़ेह दलाइल के | उन्होंने कहा | ये | जादू है |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| مُّبِيْنٌ ⑥ | وَمَنْ | اَظْلَمُ | مِمَّنِ | افْتَرٰى | عَلَى اللّٰهِ | الْكَذِبَ | وَهُوَ |
| खुल्लम-खुल्ला | और कौन | ज़्यादा ज़ालिम है | उससे जो | गढ़ ले | अल्लाह पर | झूठ | हालांकि वो |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| يُدْعٰٓى | اِلَى الْاِسْلَامِ ؕ | وَاللّٰهُ | لَا يَهْدِي | الْقَوْمَ | الظّٰلِمِيْنَ ⑦ |
| वो बुलाया जाता हो | तरफ़ इस्लाम के | और अल्लाह | नहीं वो हिदायत देता | उन लोगों को | जो ज़ालिम हैं |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| يُرِيْدُوْنَ | لِيُطْفِـُٔوْا | نُوْرَ | اللّٰهِ | بِاَفْوَاهِهِمْ | وَاللّٰهُ | مُتِمُّ | نُوْرِهٖ |
| वो चाहते हैं | कि वो बुझा दें | नूर | अल्लाह का | अपने मुंहों से | और अल्लाह | पूरा करने वाला है | अपने नूर को |

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| وَ لَوْ | كَرِهَ | الْكٰفِرُوْنَ ⑧ | هُوَ | الَّذِيْٓ | اَرْسَلَ | رَسُوْلَهٗ | بِالْهُدٰى |
| और अगरचे | नापसंद करें | काफ़िर | वो ही है | जिसने | भेजा | अपने रसूल को | साथ हिदायत के |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَدِيْنِ | الْحَقِّ | لِيُظْهِرَهٗ | عَلَى الدِّيْنِ | كُلِّهٖ | وَ لَوْ | كَرِهَ |
| और दीने | हक़ के | ताकि वो ग़ालिब कर दे उसे | ऊपर दीनों के | सब के सब | और अगरचे | नापसंद करें |

ع 1 9 9

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| الْمُشْرِكُوْنَ ⑨ ع | يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ | اٰمَنُوْا | هَلْ | اَدُلُّكُمْ | عَلٰى تِجَارَةٍ |
| मुशरिक | ऐ लोगो जो | ईमान लाए हो | क्या | मैं रहनुमाई करूं तुम्हारी | एक तिजारत पर |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| تُنْجِيْكُمْ | مِّنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ⑩ | تُؤْمِنُوْنَ | بِاللّٰهِ | وَ رَسُوْلِهٖ |
| जो निजात दे तुम्हें | दर्दनाक अज़ाब से | तुम ईमान लाओ | अल्लाह पर | और उसके रसूल पर |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| وَ تُجَاهِدُوْنَ | فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ | بِاَمْوَالِكُمْ | وَ اَنْفُسِكُمْ ؕ | ذٰلِكُمْ |
| और तुम जिहाद करो | अल्लाह के रास्ते में | साथ अपने मालों | और अपनी जानों के | ये |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| خَيْرٌ | لَّكُمْ | اِنْ | كُنْتُمْ | تَعْلَمُوْنَ ⑪ لا | يَغْفِرْ | لَكُمْ | ذُنُوْبَكُمْ |
| बेहतर है | तुम्हारे लिए | अगर | हो तुम | तुम इल्म रखते | वो बख़्श देगा | तुम्हारे लिए | तुम्हारे गुनाहों को |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| وَ يُدْخِلْكُمْ | جَنّٰتٍ | تَجْرِيْ | مِنْ تَحْتِهَا | الْاَنْهٰرُ | وَ مَسٰكِنَ |
| और वो दाख़िल करेगा तुम्हें | बाग़ात में | बहती हैं | जिनके नीचे से | नहरें | और घर |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| طَيِّبَةً | فِيْ جَنّٰتِ عَدْنٍ ؕ | ذٰلِكَ | الْفَوْزُ | الْعَظِيْمُ ⑫ لا | وَ اُخْرٰى |
| पाकीज़ा | हमेशगी के बाग़ात में | ये है | कामयाबी | बहुत बड़ी | और एक दूसरी चीज़ |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| تُحِبُّوْنَهَا ؕ | نَصْرٌ | مِّنَ اللّٰهِ | وَ فَتْحٌ | قَرِيْبٌ ؕ | وَ بَشِّرِ |
| तुम मोहब्बत रखते हो उससे | मदद | अल्लाह की तरफ़ से | और फ़तह | क़रीबी | और ख़ुशख़बरी दे दीजिए |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| الْمُؤْمِنِيْنَ ⑬ | يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ | اٰمَنُوْا | كُوْنُوْٓا | اَنْصَارَ | اللّٰهِ | كَمَا |
| मोमिनों को | ऐ लोगो जो | ईमान लाए हो | हो जाओ | मददगार | अल्लाह के | जैसे |

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| قَالَ | عِيْسَى | ابْنُ مَرْيَمَ | لِلْحَوَارِيّٖنَ | مَنْ | اَنْصَارِيْٓ | اِلَى اللّٰهِ ؕ |
| कहा था | ईसा | इबने मरियम ने | हवारियों से | कौन है | मददगार मेरा | तरफ़ अल्लाह के |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| قَالَ | الْحَوَارِيُّوْنَ | نَحْنُ | اَنْصَارُ | اللّٰهِ | فَاٰمَنَتْ | طَّآئِفَةٌ |
| कहा | हवारियों ने | हम हैं | मददगार | अल्लाह के | तो ईमान लाया | एक गिरोह |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| مِّنْۢ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ | وَ كَفَرَتْ | طَّآئِفَةٌ ۚ | فَاَيَّدْنَا | الَّذِيْنَ |
| बनी इस्राईल में से | और कुफ़्र किया | एक गिरोह ने | तो क़ुव्वत दी हमने | उनको जो |

| | | | |
|---|---|---|---|
| اٰمَنُوْا | عَلٰى عَدُوِّهِمْ | فَاَصْبَحُوْا | ظٰهِرِيْنَ ⑭ ع |
| ईमान लाए | ऊपर उनके दुश्मनों के | तो हो गए वो | ग़ालिब |

ع 2 5 10

## سُوْرَةُ الْجُمُعَةِ مَدَنِيَّةٌ 110 — 62

اٰيَاتُهَا: 11 — رُكُوْعَاتُهَا: 2

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| يُسَبِّحُ | لِلّٰهِ | مَا | فِي السَّمٰوٰتِ | وَمَا | فِي الْاَرْضِ | الْمَلِكِ |
| तस्बीह करती है | अल्लाह के लिए | हर वो चीज़ जो | आसमानों में है | और जो | ज़मीन में है | जो बादशाह है |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| الْقُدُّوْسِ | الْعَزِيْزِ | الْحَكِيْمِ ① | هُوَ | الَّذِيْ | بَعَثَ | فِي الْاُمِّيّٖنَ |
| निहायत पाकीज़ा है | बहुत ज़बरदस्त है | ख़ूब हिक्मत वाला है | वो ही है | जिसने | भेजा | अनपढ़ लोगों में |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| رَسُوْلًا | مِّنْهُمْ | يَتْلُوْا | عَلَيْهِمْ | اٰيٰتِهٖ | وَيُزَكِّيْهِمْ | وَيُعَلِّمُهُمُ |
| एक रसूल | उन्हीं में से | जो तिलावत करता है | उन पर | उसकी आयात | और वो तज़किया करता है उनका | और वो सिखाता है उन्हें |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| الْكِتٰبَ | وَالْحِكْمَةَ ۗ | وَاِنْ | كَانُوْا | مِنْ قَبْلُ | لَفِيْ ضَلٰلٍ | مُّبِيْنٍ ② ۙ |
| किताब | और हिक्मत | और बेशक | थे वो | इससे पहले | अलबत्ता गुमराही में | खुली |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَّاٰخَرِيْنَ | مِنْهُمْ | لَمَّا | يَلْحَقُوْا | بِهِمْ ؕ | وَهُوَ | الْعَزِيْزُ |
| और दूसरों (के लिए भी) | उनमें से | जो अभी तक नहीं | वो मिले | उनसे | और वो | बहुत ज़बरदस्त है |

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| الْحَكِيْمُ ③ | ذٰلِكَ | فَضْلُ | اللّٰهِ | يُؤْتِيْهِ | مَنْ | يَّشَآءُ ؕ | وَاللّٰهُ |
| ख़ूब हिक्मत वाला है | ये | फ़ज़ल है | अल्लाह का | वो देता है उसको | जिसे | वो चाहता है | और अल्लाह |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ذُو الْفَضْلِ | الْعَظِيْمِ ④ | مَثَلُ | الَّذِيْنَ | حُمِّلُوا | التَّوْرٰىةَ | ثُمَّ |
| फ़ज़्ल वाला है | बहुत बड़े | मिसाल | उनकी जो | उठवाए गए | तौरात | फिर |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| لَمْ | يَحْمِلُوْهَا | كَمَثَلِ | الْحِمَارِ | يَحْمِلُ | اَسْفَارًا ؕ | بِئْسَ | مَثَلُ |
| नहीं | उन्होंने उठाया उसे | मानिंद मिसाल | गधे की | जो उठाता है | किताबें | कितनी बुरी है | मिसाल |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| الْقَوْمِ | الَّذِيْنَ | كَذَّبُوْا | بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ؕ | وَاللّٰهُ | لَا يَهْدِى | الْقَوْمَ |
| उन लोगों की | जिन्होंने | झुठलाया | अल्लाह की आयात को | और अल्लाह | नहीं वो हिदायत देता | उन लोगों को |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| الظّٰلِمِيْنَ ⑤ | قُلْ | يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ | هَادُوْۤا | اِنْ | زَعَمْتُمْ | اَنَّكُمْ |
| जो ज़ालिम हैं | कह दीजिए | ऐ लोगो जो | यहूदी बन गए हो | अगर | तुम ज़अम/गुमान रखते हो | बेशक तुम |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| اَوْلِيَآءُ | لِلّٰهِ | مِنْ دُوْنِ | النَّاسِ | فَتَمَنَّوُا | الْمَوْتَ | اِنْ | كُنْتُمْ |
| दोस्त हो | अल्लाह के | सिवाय | लोगों के | पस तुम तमन्ना करो | मौत की | अगर | हो तुम |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| صٰدِقِيْنَ ⑥ | وَلَا | يَتَمَنَّوْنَهٗۤ | اَبَدًا | بِمَا | قَدَّمَتْ | اَيْدِيْهِمْ ؕ |
| सच्चे | और नहीं | वो तमन्ना करेंगे उसकी | कभी भी | बवजह उसके जो | आगे भेजा | उनके हाथों ने |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَاللّٰهُ | عَلِيْمٌۢ | بِالظّٰلِمِيْنَ ⑦ | قُلْ | اِنَّ | الْمَوْتَ | الَّذِىْ |
| और अल्लाह | ख़ूब जानने वाला है | ज़ालिमों को | कह दीजिए | बेशक | मौत | वो जो |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| تَفِرُّوْنَ | مِنْهُ | فَاِنَّهٗ | مُلٰقِيْكُمْ | ثُمَّ | تُرَدُّوْنَ | اِلٰى عٰلِمِ | الْغَيْبِ |
| तुम भागते हो | उससे | तो बेशक वो | मिलने वाली है तुम से | फिर | तुम लौटाए जाओगे | तरफ़ जानने वाले | ग़ैब के |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَالشَّهَادَةِ | فَيُنَبِّئُكُمْ | بِمَا | كُنْتُمْ | تَعْمَلُوْنَ ⑧ ع | يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ | ع 1 8 11 |
| और हाज़िर के | फिर वो बता देगा तुम्हें | वो जो | थे तुम | तुम अमल करते | ऐ लोगो जो | |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اٰمَنُوْٓا | اِذَا | نُوْدِيَ | لِلصَّلٰوةِ | مِنْ يَّوْمِ | الْجُمُعَةِ | فَاسْعَوْا |
| ईमान लाए हो | जब | पुकारा जाए | नमाज़ के लिए | दिन | जुमा के | तो दौड़ो |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اِلٰى ذِكْرِ اللّٰهِ | وَذَرُوا | الْبَيْعَ ؕ | ذٰلِكُمْ | خَيْرٌ | لَّكُمْ | اِنْ |
| तरफ़ अल्लाह के ज़िक्र के | और छोड़ दो | ख़रीदो फ़रोख़्त | ये | बेहतर है | तुम्हारे लिए | अगर |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| كُنْتُمْ | تَعْلَمُوْنَ ⑨ | فَاِذَا | قُضِيَتِ | الصَّلٰوةُ | فَانْتَشِرُوْا | فِي الْاَرْضِ |
| हो तुम | तुम इल्म रखते | फिर जब | पूरी हो जाए | नमाज़ | तो फैल जाओ | ज़मीन में |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| وَابْتَغُوْا | مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ | وَاذْكُرُوا | اللّٰهَ | كَثِيْرًا | لَّعَلَّكُمْ |
| और तलाश करो | अल्लाह के फ़ज़ल में से | और ज़िक्र करो | अल्लाह का | कसरत से | ताकि तुम |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| تُفْلِحُوْنَ ⑩ | وَاِذَا | رَاَوْا | تِجَارَةً | اَوْ | لَهْوَا |
| तुम फ़लाह पा जाओ | और जब | उन्होंने देखा | तिजारत को | या | खेल-तमाशे को |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اِلَيْهَا | وَتَرَكُوْكَ | قَآئِمًا ؕ | قُلْ | مَا | عِنْدَ اللّٰهِ | خَيْرٌ |
| तरफ़ उसके | और उन्होंने छोड़ दिया आपको | खड़े हुए | कह दीजिए | जो | अल्लाह के पास है | बेहतर है |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| مِّنَ اللَّهْوِ | وَمِنَ التِّجَارَةِ ؕ | وَاللّٰهُ | خَيْرُ | الرّٰزِقِيْنَ ⑪ ع |
| खेल तमाशे से | और तिजारत से | और अल्लाह | बेहतर है | सब रिज़्क़ देने वालों से |

ع 2 3 12

## سُوْرَةُ الْمُنٰفِقُوْنَ مَدَنِيَّةٌ 104 — 63

اٰيَاتُهَا: 11 — رُكُوْعَاتُهَا: 2

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اِذَا | جَآءَكَ | الْمُنٰفِقُوْنَ | قَالُوْا | نَشْهَدُ | اِنَّكَ | لَرَسُوْلُ |
| जब | आते हैं आपके पास | मुनाफ़िक़ | वो कहते हैं | हम गवाही देते हैं | कि बेशक आप | यक़ीनन रसूल हैं |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اللّٰهِ ۘ | وَاللّٰهُ | يَعْلَمُ | اِنَّكَ | لَرَسُوْلُهٗ ؕ | وَاللّٰهُ | يَشْهَدُ | اِنَّ |
| अल्लाह के | और अल्लाह | वो जानता है | बेशक आप | यक़ीनन रसूल हैं उसके | और अल्लाह | गवाही देता है | बेशक |

وقف لازم

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| الْمُنٰفِقِيْنَ | لَكٰذِبُوْنَ ① ج | اِتَّخَذُوْٓا | اَيْمَانَهُمْ | جُنَّةً | فَصَدُّوْا |
| मुनाफ़िक़ | अलबत्ता झूठे हैं | उन्होंने बना लिया | अपनी क़समों को | ढाल | तो उन्होंने रोका |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ط | اِنَّهُمْ | سَآءَ | مَا | كَانُوْا | يَعْمَلُوْنَ ② | ذٰلِكَ |
| अल्लाह के रास्ते से | बेशक वो | कितना बुरा है | जो | हैं वो | वो अमल करते | ये |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| بِاَنَّهُمْ | اٰمَنُوْا | ثُمَّ | كَفَرُوْا | فَطُبِعَ | عَلٰى قُلُوْبِهِمْ | فَهُمْ |
| बवजह उसके कि वो | वो ईमान लाए | फिर | उन्होंने कुफ़्र किया | तो मोहर लगा दी गई | ऊपर उनके दिलों के | पस वो |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| لَا يَفْقَهُوْنَ ③ | وَاِذَا | رَاَيْتَهُمْ | تُعْجِبُكَ | اَجْسَامُهُمْ ط | وَاِنْ | يَّقُوْلُوْا |
| नहीं वो समझते | और जब | देखें आप उन्हें | अच्छे लगेंगे आपको | जिस्म उनके | और अगर | वो बात करें |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| تَسْمَعْ | لِقَوْلِهِمْ ط | كَاَنَّهُمْ | خُشُبٌ | مُّسَنَّدَةٌ ط | يَحْسَبُوْنَ | كُلَّ |
| आप सुनते रह जाऐं | उनकी बात को | गोया कि वो | लकड़ियां हैं | टेक लगाई हुई | वो गुमान करते हैं | हर |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| صَيْحَةٍ | عَلَيْهِمْ ط | هُمُ | الْعَدُوُّ | فَاحْذَرْهُمْ ط | قٰتَلَهُمُ | اللّٰهُ ز | اَنّٰى |
| बुलंद आवाज़ को | अपने ऊपर | वो ही | दुश्मन हैं | पस आप मोहतात रहिए उनसे | ग़ारत करे उन्हें | अल्लाह | कहां से |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| يُؤْفَكُوْنَ ④ | وَاِذَا | قِيْلَ | لَهُمْ | تَعَالَوْا | يَسْتَغْفِرْ | لَكُمْ |
| वो फेरे जाते हैं | और जब | कहा जाता है | उनसे | आओ | बख़्शिश की दुआ करें | तुम्हारे लिए |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| رَسُوْلُ اللّٰهِ | لَوَّوْا | رُءُوْسَهُمْ | وَرَاَيْتَهُمْ | يَصُدُّوْنَ | وَهُمْ |
| अल्लाह के रसूल | वो मोड़ते हैं | अपने सरों को | और देखते हैं आप उन्हें | वो रुकते हैं | इस हाल में कि वो |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| مُّسْتَكْبِرُوْنَ ⑤ | سَوَآءٌ | عَلَيْهِمْ | اَسْتَغْفَرْتَ | لَهُمْ | اَمْ | لَمْ | تَسْتَغْفِرْ |
| तकब्बुर करने वाले हैं | यक्सां है | उन पर | ख़्वाह बख़्शिश मांगें आप | उनके लिए | या | ना | आप बख़्शिश मांगें |

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| لَهُمْ ط | لَنْ | يَّغْفِرَ | اللّٰهُ | لَهُمْ ط | اِنَّ | اللّٰهَ | لَا يَهْدِى | الْقَوْمَ |
| उनके लिए | हरगिज़ नहीं | बख़्शेगा | अल्लाह | उन्हें | बेशक | अल्लाह | नहीं वो हिदायत देता | उन लोगों को |

HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| الْفٰسِقِيْنَ ⑥ | هُمْ | الَّذِيْنَ | يَقُوْلُوْنَ | لَا تُنْفِقُوْا | عَلٰى | مَنْ | عِنْدَ |
| जो फ़ासिक़ है | वो ही हैं | जो | कहते हैं | ना तुम ख़र्च करो | ऊपर | उनके जो | पास हैं |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| رَسُوْلِ اللّٰهِ | حَتّٰى | يَنْفَضُّوْا ؕ | وَلِلّٰهِ | خَزَآئِنُ | السَّمٰوٰتِ | وَالْاَرْضِ |
| रसूल अल्लाह के | यहां तक कि | वो मुंतशिर हो जाऐं | और अल्लाह ही के लिए हैं | ख़ज़ाने | आसमानों | और ज़मीन के |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| وَلٰكِنَّ | الْمُنٰفِقِيْنَ | لَا يَفْقَهُوْنَ ⑦ | يَقُوْلُوْنَ | لَئِنْ | رَّجَعْنَآ |
| और लेकिन | मुनाफ़िक़ | नहीं वो समझते | वो कहते हैं | अलबत्ता अगर | वापस लौटे हम |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| اِلَى الْمَدِيْنَةِ | لَيُخْرِجَنَّ | الْاَعَزُّ | مِنْهَا | الْاَذَلَّ ؕ | وَلِلّٰهِ |
| तरफ़ मदीना के | अलबत्ता ज़रूर निकाल देगा | ज़्यादा इज़्ज़त वाला | उससे | ज़्यादा ज़िल्लत वाले को | और अल्लाह ही के लिए है |

ع 1 8 13

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| الْعِزَّةُ | وَلِرَسُوْلِهٖ | وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ | وَلٰكِنَّ | الْمُنٰفِقِيْنَ | لَا يَعْلَمُوْنَ ⑧ ع |
| इज़्ज़त | और उसके रसूल के लिए | और मोमिनों के लिए | और लेकिन | मुनाफ़िक़ | नहीं वो जानते |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ | اٰمَنُوْا | لَا تُلْهِكُمْ | اَمْوَالُكُمْ | وَلَآ | اَوْلَادُكُمْ |
| ऐ लोगो जो | ईमान लाए हो | ना ग़ाफ़िल करें तुम्हें | माल तुम्हारे | और ना | औलाद तुम्हारी |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ ۚ | وَمَنْ | يَّفْعَلْ | ذٰلِكَ | فَاُولٰٓئِكَ | هُمُ | الْخٰسِرُوْنَ ⑨ |
| अल्लाह के ज़िक्र से | और जो कोई | करेगा | ऐसा | तो यही लोग हैं | वो | जो ख़सारा पाने वाले हैं |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَاَنْفِقُوْا | مِنْ مَّا | رَزَقْنٰكُمْ | مِّنْ قَبْلِ | اَنْ | يَّاْتِيَ | اَحَدَكُمُ |
| और ख़र्च करो | उसमें से जो | रिज़्क़ दिया हमने तुम्हें | इससे पहले | कि | आ जाए | तुम में से किसी एक को |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| الْمَوْتُ | فَيَقُوْلَ | رَبِّ | لَوْلَآ | اَخَّرْتَنِيْٓ | اِلٰٓى اَجَلٍ | قَرِيْبٍ ۙ |
| मौत | तो वो कहे | ऐ मेरे रब | क्यों ना | मोहलत दी तूने मुझे | एक वक़्त तक | क़रीब के |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| فَاَصَّدَّقَ | وَاَكُنْ | مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ⑩ | وَلَنْ | يُّؤَخِّرَ | اللّٰهُ | نَفْسًا |
| तो मैं सदक़ा करता | और मैं हो जाता | नेक लोगों में से | और हरगिज़ ना | मोहलत देगा | अल्लाह | किसी नफ़्स को |

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

ع 2 3 14

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اِذَا | جَآءَ | اَجَلُهَا ؕ | وَاللّٰهُ | خَبِيْرٌۢ | بِمَا | تَعْمَلُوْنَ ⑪ ع |
| जब | आ जाएगी | मौत उसकी | और अल्लाह | ख़ूब ख़बर रखने वाला है | उसकी जो | तुम अमल करते हो |

## سُوْرَةُ التَّغَابُنِ مَدَنِيَّةٌ 108 — 64

اٰيَاتُهَا: 18 — رُكُوْعَاتُهَا: 2

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| يُسَبِّحُ | لِلّٰهِ | مَا | فِى السَّمٰوٰتِ | وَمَا | فِى الْاَرْضِ ۚ | لَهُ | الْمُلْكُ |
| तस्बीह करती है | अल्लाह के लिए | हर वो चीज़ जो | आसमानों में है | और जो | ज़मीन में है | उसी के लिए है | बादशाहत |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| وَلَهُ | الْحَمْدُ ۫ | وَهُوَ | عَلٰى | كُلِّ | شَىْءٍ | قَدِيْرٌ ① | هُوَ | الَّذِىْ |
| और उसी के लिए है | सब तारीफ़ | और वो | ऊपर | हर | चीज़ के | ख़ूब क़ुदरत रखने वाला है | वो ही है | जिसने |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| خَلَقَكُمْ | فَمِنْكُمْ | كَافِرٌ | وَّمِنْكُمْ | مُّؤْمِنٌ ؕ | وَاللّٰهُ | بِمَا |
| पैदा किया तुम्हें | तो तुम में से | कोई काफ़िर है | और तुम में से | कोई मोमिन है | और अल्लाह | उसे जो |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| تَعْمَلُوْنَ | بَصِيْرٌ ② | خَلَقَ | السَّمٰوٰتِ | وَالْاَرْضَ | بِالْحَقِّ | وَصَوَّرَكُمْ |
| तुम अमल करते हो | ख़ूब देखने वाला है | उसने पैदा किया | आसमानों | और ज़मीन को | साथ हक़ के | और सूरत बनाई तुम्हारी |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| فَاَحْسَنَ | صُوَرَكُمْ ۚ | وَاِلَيْهِ | الْمَصِيْرُ ③ | يَعْلَمُ | مَا | فِى السَّمٰوٰتِ |
| तो उसने अच्छी बनाईं | सूरतें तुम्हारी | और तरफ़ उसी के | लौटना है | वो जानता है | जो कुछ | आसमानों में है |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| وَالْاَرْضِ | وَيَعْلَمُ | مَا | تُسِرُّوْنَ | وَمَا | تُعْلِنُوْنَ ؕ | وَاللّٰهُ | عَلِيْمٌۢ |
| और ज़मीन में | और वो जानता है | जो कुछ | तुम छुपाते हो | और जो कुछ | तुम ज़ाहिर करते हो | और अल्लाह | ख़ूब जानने वाला है |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ④ | اَلَمْ | يَاْتِكُمْ | نَبَؤُا | الَّذِيْنَ | كَفَرُوْا |
| सीनों वाले (भेद) | क्या नहीं | आई तुम्हारे पास | ख़बर | उनकी जिन्होंने | कुफ़्र किया |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| مِنْ قَبْلُ ۫ | فَذَاقُوْا | وَبَالَ | اَمْرِهِمْ | وَلَهُمْ | عَذَابٌ | اَلِيْمٌ ⑤ |
| उससे पहले | फिर उन्होंने चखा | वबाल | अपने काम का | और उनके लिए है | अज़ाब | दर्दनाक |

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ذٰلِكَ | بِاَنَّهٗ | كَانَتْ | تَّاْتِيْهِمْ | رُسُلُهُمْ | بِالْبَيِّنٰتِ | فَقَالُوْٓا | اَبَشَرٌ |
| ये | बवजह उसके कि वो | थे | आते उनके पास | रसूल उनके | साथ वाज़ेह आयात के | तो वो कहते | क्या इंसान |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| يَّهْدُوْنَنَا ۫ | فَكَفَرُوْا | وَتَوَلَّوْا | وَّاسْتَغْنَى | اللّٰهُ ؕ | وَاللّٰهُ | غَنِيٌّ |
| रहनुमाई करेंगे हमारी | तो उन्होंने कुफ़्र किया | और वो मुंह मोड़ गए | और परवाह ना की | अल्लाह ने | और अल्लाह | बहुत बेनियाज़ है |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| حَمِيْدٌ ⑥ | زَعَمَ | الَّذِيْنَ | كَفَرُوْٓا | اَنْ | لَّنْ | يُّبْعَثُوْا ؕ | قُلْ |
| ख़ूब तारीफ़ वाला है | दावा किया | उन लोगों ने जिन्होंने | कुफ़्र किया | कि | हरगिज़ नहीं | वो उठाए जाऐंगे | कह दीजिए |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| بَلٰى | وَرَبِّيْ | لَتُبْعَثُنَّ | ثُمَّ | لَتُنَبَّؤُنَّ | بِمَا | عَمِلْتُمْ ؕ |
| क्यों नहीं | क़सम है मेरे रब की | अलबत्ता तुम ज़रूर उठाए जाओगे | फिर | अलबत्ता तुम ज़रूर ख़बर दिए जाओगे | उसकी जो | अमल किए तुमने |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَذٰلِكَ | عَلَى اللّٰهِ | يَسِيْرٌ ⑦ | فَاٰمِنُوْا | بِاللّٰهِ | وَرَسُوْلِهٖ | وَالنُّوْرِ |
| और ये | अल्लाह पर | बहुत आसान है | पस ईमान लाओ | अल्लाह पर | और उसके रसूल पर | और उस नूर पर |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| الَّذِيْٓ | اَنْزَلْنَا ؕ | وَاللّٰهُ | بِمَا | تَعْمَلُوْنَ | خَبِيْرٌ ⑧ | يَوْمَ |
| वो जो | नाज़िल किया हमने | और अल्लाह | उसकी जो | तुम अमल करते हो | ख़ूब ख़बर रखने वाला है | जिस दिन |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| يَجْمَعُكُمْ | لِيَوْمِ الْجَمْعِ | ذٰلِكَ | يَوْمُ | التَّغَابُنِ ؕ | وَمَنْ |
| वो जमा करेगा तुम्हें | जमा होने के दिन के लिए | ये | दिन होगा | हार-जीत का | और जो कोई |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| يُّؤْمِنْ | بِاللّٰهِ | وَيَعْمَلْ | صَالِحًا | يُّكَفِّرْ | عَنْهُ | سَيِّاٰتِهٖ |
| ईमान लाएगा | अल्लाह पर | और वो अमल करेगा | नेक | वो दूर कर देगा | उससे | बुराईया उसकी |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَيُدْخِلْهُ | جَنّٰتٍ | تَجْرِيْ | مِنْ تَحْتِهَا | الْاَنْهٰرُ | خٰلِدِيْنَ | فِيْهَآ |
| और वो दाख़िल करेगा उसे | बाग़ात में | बहती हैं | उनके नीचे से | नहरें | हमेशा रहने वाले हैं | उनमें |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اَبَدًا ؕ | ذٰلِكَ | الْفَوْزُ | الْعَظِيْمُ ⑨ | وَالَّذِيْنَ | كَفَرُوْا | وَكَذَّبُوْا |
| हमेशा-हमेशा | यही | कामयाबी है | बहुत बड़ी | और वो जिन्होंने | कुफ़्र किया | और झुठलाया |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| بِاٰيٰتِنَآ | اُولٰٓئِكَ | اَصْحٰبُ | النَّارِ | خٰلِدِيْنَ | فِيْهَا ؕ | وَبِئْسَ |
| हमारी आयात को | यही लोग हैं | साथी | आग के | हमेशा रहने वाले हैं | उसमें | और कितनी बुरी है |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| الْمَصِيْرُ ⑩ ع | مَآ | اَصَابَ | مِنْ مُّصِيْبَةٍ | اِلَّا | بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ | وَمَنْ |
| लौटने की जगह | नहीं | पहुंचती | कोई मुसीबत | मगर | अल्लाह के इज़्न से | और जो कोई |

ع 1 10 15 الثلثة

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| يُّؤْمِنْ | بِاللّٰهِ | يَهْدِ | قَلْبَهٗ ؕ | وَاللّٰهُ | بِكُلِّ | شَيْءٍ | عَلِيْمٌ ⑪ |
| ईमान लाता है | अल्लाह पर | वो हिदायत देता है | उसके दिल को | और अल्लाह | हर | चीज़ को | ख़ूब जानने वाला है |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَاَطِيْعُوا | اللّٰهَ | وَاَطِيْعُوا | الرَّسُوْلَ ۚ | فَاِنْ | تَوَلَّيْتُمْ | فَاِنَّمَا |
| और इताअत करो | अल्लाह की | और इताअत करो | रसूल की | फिर अगर | मुंह मोड़ते हो तुम | तो बेशक |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| عَلٰى رَسُوْلِنَا | الْبَلٰغُ | الْمُبِيْنُ ⑫ | اَللّٰهُ | لَآ | اِلٰهَ | اِلَّا | هُوَ ؕ |
| ऊपर हमारे रसूल के | पहुंचा देना है | खुल्लम-खुल्ला | अल्लाह | नहीं | कोई इलाह (बरहक़) | मगर | वो ही |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| وَعَلَى اللّٰهِ | فَلْيَتَوَكَّلِ | الْمُؤْمِنُوْنَ ⑬ | يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ | اٰمَنُوْٓا | اِنَّ |
| और अल्लाह ही पर | पस चाहिए कि तवक्कल करें | मोमिन | ऐ लोगो जो | ईमान लाए हो | बेशक |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| مِنْ اَزْوَاجِكُمْ | وَاَوْلَادِكُمْ | عَدُوًّا | لَّكُمْ | فَاحْذَرُوْهُمْ ۚ | وَاِنْ |
| तुम्हारी बीवियों में से | और तुम्हारी औलाद में से | दुश्मन हैं | तुम्हारे | पस मोहतात रहो उनसे | और अगर |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| تَعْفُوْا | وَتَصْفَحُوْا | وَتَغْفِرُوْا | فَاِنَّ | اللّٰهَ | غَفُوْرٌ | رَّحِيْمٌ ⑭ |
| तुम माफ़ कर दो | और तुम दरगुज़र करो | और तुम बख़्श दो | तो बेशक | अल्लाह | बहुत बख़्शने वाला है | निहायत रहम करने वाला है |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اِنَّمَآ | اَمْوَالُكُمْ | وَاَوْلَادُكُمْ | فِتْنَةٌ ؕ | وَاللّٰهُ | عِنْدَهٗٓ | اَجْرٌ |
| बेशक | माल तुम्हारे | और औलाद तुम्हारी | आज़माइश हैं | और अल्लाह | उसी के पास | अजर है |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| عَظِيْمٌ ⑮ | فَاتَّقُوا | اللّٰهَ | مَا | اسْتَطَعْتُمْ | وَاسْمَعُوْا | وَاَطِيْعُوْا |
| बहुत बड़ा | पस डरो | अल्लाह से | जितनी | इस्तिताअत रखते हो तुम | और सुनो | और इताअत करो |

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| نَفْسِهٖ | شُحَّ | يُّوْقَ | وَمَنْ | لِّاَنْفُسِكُمْ ط | خَيْرًا | وَاَنْفِقُوْا |
| अपने नफ़्स की | बख़ीली से | बचा लिया गया | और जो कोई | तुम्हारे नफ़्सों के लिए | बेहतर है | और ख़र्च करो |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| حَسَنًا | قَرْضًا | اللّٰهَ | تُقْرِضُوا | اِنْ | الْمُفْلِحُوْنَ (16) | هُمُ | فَاُولٰٓئِكَ |
| अच्छा | क़र्ज़ | अल्लाह को | तुम क़र्ज़ दोगे | अगर | जो फ़लाह पाने वाले हैं | वो | तो यही लोग हैं |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| حَلِيْمٌ (17) لا | شَكُوْرٌ | وَاللّٰهُ | لَكُمْ ط | وَيَغْفِرْ | لَكُمْ | يُّضٰعِفْهُ |
| निहायत बुर्दबार है | बहुत क़द्रदान है | और अल्लाह | तुम्हें | और वो बख़्श देगा | तुम्हारे लिए | वो कई गुना कर देगा उसे |

ع 2 8 16

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| الْحَكِيْمُ (18) ع | الْعَزِيْزُ | وَالشَّهَادَةِ | الْغَيْبِ | عٰلِمُ |
| ख़ूब हिक्मत वाला है | बहुत ज़बरदस्त है | और हाज़िर का | ग़ैब | जानने वाला है |

## رُكُوْعَاتُهَا: 2 — 99 سُوْرَةُ الطَّلَاقِ مَدَنِيَّةٌ 65 — اٰيَاتُهَا: 12

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| لِعِدَّتِهِنَّ | فَطَلِّقُوْهُنَّ | النِّسَآءَ | طَلَّقْتُمُ | اِذَا | النَّبِيُّ | يٰٓاَيُّهَا |
| उनकी इद्दत के लिए | तो तलाक़ दो उन्हें | औरतों को | तलाक़ दो तुम | जब | नबी | ऐ |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| مِنْ بُيُوْتِهِنَّ | لَا تُخْرِجُوْهُنَّ | رَبَّكُمْ ج | اللّٰهَ | وَاتَّقُوا | الْعِدَّةَ ج | وَاَحْصُوا |
| उनके घरों से | ना तुम निकालो उन्हें | जो रब है तुम्हारा | अल्लाह से | और डरो | इद्दत को | और शुमार करो |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| وَتِلْكَ | مُّبَيِّنَةٍ ط | بِفَاحِشَةٍ | يَّاْتِيْنَ | اَنْ | اِلَّآ | يَخْرُجْنَ | وَلَا |
| और यह | खुली | बेहयाई को | वो आएं | ये कि | मगर | वो निकलें | और ना |

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| نَفْسَهٗ ط | ظَلَمَ | فَقَدْ | اللّٰهِ | حُدُوْدَ | يَّتَعَدَّ | وَمَنْ | اللّٰهِ ط | حُدُوْدُ |
| अपनी जान पर | उसने ज़ुल्म किया | तो तहक़ीक़ | अल्लाह की | हुदूद से | तजावुज़ करेगा | और जो कोई | अल्लाह की | हुदूद हैं |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| فَاِذَا | اَمْرًا (1) | ذٰلِكَ | بَعْدَ | يُحْدِثُ | اللّٰهَ | لَعَلَّ | لَا تَدْرِيْ |
| फिर जब | कोई सूरत | इसके | बाद | वो पैदा कर दे | अल्लाह | शायद कि | नहीं तुम जानते |

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| بَلَغْنَ | اَجَلَهُنَّ | فَاَمْسِكُوْهُنَّ | بِمَعْرُوْفٍ | اَوْ | فَارِقُوْهُنَّ | بِمَعْرُوْفٍ |
| वो पहुंचें | अपनी मुद्दत को | तो रोक लो उन्हें | भले तरीक़े से | या | जुदा कर दो उन्हें | भले तरीक़े से |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَّاَشْهِدُوْا | ذَوَىْ عَدْلٍ | مِّنْكُمْ | وَاَقِيْمُوا | الشَّهَادَةَ | لِلّٰهِ ؕ | ذٰلِكُمْ |
| और गवाह बना लो | दो अदल वालों को | तुम में से | और क़ायम करो | गवाही | अल्लाह के लिए | ये (है हुक्म) |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| يُوْعَظُ | بِهٖ | مَنْ | كَانَ | يُؤْمِنُ | بِاللّٰهِ | وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ |
| नसीहत की जाती है | जिसकी | उसे जो | हो वो | वो ईमान रखता | अल्लाह पर | और आख़िरी दिन पर |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَمَنْ | يَّتَّقِ | اللّٰهَ | يَجْعَلْ | لَّهٗ | مَخْرَجًا ۙ② | وَّيَرْزُقْهُ |
| और जो कोई | डरेगा | अल्लाह से | वो पैदा कर देगा | उसके लिए | निकलने का रास्ता | और वो रिज़्क़ देगा उसे |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| مِنْ حَيْثُ | لَا يَحْتَسِبُ ؕ | وَمَنْ | يَّتَوَكَّلْ | عَلَى اللّٰهِ | فَهُوَ | حَسْبُهٗ ؕ |
| जहाँ से | ना वो गुमान करता हो | और जो कोई | तवक्कल करेगा | अल्लाह पर | तो वो | काफ़ी है उसे |

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| اِنَّ | اللّٰهَ | بَالِغُ | اَمْرِهٖ ؕ | قَدْ | جَعَلَ | اللّٰهُ | لِكُلِّ | شَيْءٍ |
| बेशक | अल्लाह | पूरा करने वाला है | अपने काम को | तहक़ीक | बना दिया | अल्लाह ने | वास्ते हर | चीज़ के |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| قَدْرًا ③ | وَالّٰٓـِٔيْ | يَئِسْنَ | مِنَ الْمَحِيْضِ | مِنْ نِّسَآئِكُمْ | اِنِ |
| एक अन्दाज़ा | और वो औरतें | जो मायूस हो चुकी हों | हैज़ से | तुम्हारी औरतों में से | अगर |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ارْتَبْتُمْ | فَعِدَّتُهُنَّ | ثَلٰثَةُ | اَشْهُرٍ ۙ | وَّالّٰٓـِٔيْ | لَمْ | يَحِضْنَ ؕ |
| शक हो तुम्हें | तो इद्दत उनकी | तीन | माह है | और उन औरतों (की भी) जो | नहीं | वो हायज़ा हुईं |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| وَاُولَاتُ الْاَحْمَالِ | اَجَلُهُنَّ | اَنْ | يَّضَعْنَ | حَمْلَهُنَّ ؕ | وَمَنْ |
| और हमल वालियां | इद्दत उनकी (ये है) | कि | वो वज़अ कर दें | हमल अपना | और जो कोई |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| يَّتَّقِ | اللّٰهَ | يَجْعَلْ | لَّهٗ | مِنْ اَمْرِهٖ | يُسْرًا ④ | ذٰلِكَ | اَمْرُ |
| डरेगा | अल्लाह से | वो कर देगा | उसके लिए | उसके काम में | आसानी | ये | हुक्म है |

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| اللّٰهِ | اَنْزَلَهٗٓ | اِلَيْكُمْ ؕ | وَمَنْ | يَّتَّقِ | اللّٰهَ | يُكَفِّرْ | عَنْهُ |
| अल्लाह का | उसने नाज़िल किया है उसे | तरफ़ तुम्हारे | और जो कोई | डरेगा | अल्लाह से | वो दूर कर देगा | उससे |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| سَيِّاٰتِهٖ | وَيُعْظِمْ | لَهٗٓ | اَجْرًا ۝5 | اَسْكِنُوْهُنَّ | مِنْ حَيْثُ | سَكَنْتُمْ |
| बुराईयां उसकी | और वो बड़ा कर देगा | उसके लिए | अज्र | रिहाइश दो उन औरतों को | जहां | रहते हो तुम |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| مِّنْ وُّجْدِكُمْ | وَلَا | تُضَآرُّوْهُنَّ | لِتُضَيِّقُوْا | عَلَيْهِنَّ ؕ | وَاِنْ | كُنَّ |
| अपनी वुसअत के मुताबिक़ | और ना | तुम ज़रर पहुंचाओ उन्हें | ताकि तुम तंगी करो | उन पर | और अगर | हों वो |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اُولَاتِ حَمْلٍ | فَاَنْفِقُوْا | عَلَيْهِنَّ | حَتّٰى | يَضَعْنَ | حَمْلَهُنَّ ۚ | فَاِنْ |
| हमल वालियां | तो ख़र्च करो | उन पर | यहां तक कि | वो वज़अ कर दें | हमल अपना | फिर अगर |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اَرْضَعْنَ | لَكُمْ | فَاٰتُوْهُنَّ | اُجُوْرَهُنَّ ۚ | وَاْتَمِرُوْا | بَيْنَكُمْ | بِمَعْرُوْفٍ ۚ |
| वो दूध पिलाऐं | तुम्हारे लिए | तो दे दो उन्हें | उजरतें उनकी | और मशवरा करो | आपस में | भले तरीक़े से |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَاِنْ | تَعَاسَرْتُمْ | فَسَتُرْضِعُ | لَهٗٓ | اُخْرٰى ۝6 ؕ | لِيُنْفِقْ | ذُوْ سَعَةٍ |
| और अगर | तुमने बाहम दुशवारी पैदा की | तो दूध पिला देगी | उसे | कोई दूसरी | ताकि ख़र्च करे | वुसअत वाला |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| مِّنْ سَعَتِهٖ ؕ | وَمَنْ | قُدِرَ | عَلَيْهِ | رِزْقُهٗ | فَلْيُنْفِقْ | مِمَّآ |
| अपनी वुसअत में से | और जो कोई | तंग किया गया | उस पर | रिज़्क़ उसका | पस चाहिए कि वो ख़र्च करे | उसमें से जो |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| اٰتٰىهُ | اللّٰهُ ؕ | لَا يُكَلِّفُ | اللّٰهُ | نَفْسًا | اِلَّا | مَآ | اٰتٰىهَا ؕ |
| दिया है उसे | अल्लाह ने | नहीं तकलीफ़ देता | अल्लाह | किसी नफ़्स को | मगर | जितना | उसने दिया उसे |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| سَيَجْعَلُ | اللّٰهُ | بَعْدَ | عُسْرٍ | يُّسْرًا ۝7 ع | وَكَاَيِّنْ | مِّنْ قَرْيَةٍ |
| अनक़रीब कर देगा | अल्लाह | बाद | तंगी के | आसानी | और कितनी ही | बस्तियां हैं |

ع 1 7 17

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| عَتَتْ | عَنْ اَمْرِ | رَبِّهَا | وَرُسُلِهٖ | فَحَاسَبْنٰهَا | حِسَابًا |
| उन्होंने सरकशी की | हुक्म से | अपने रब के | और उसके रसूलों से | तो हिसाब लिया हमने उनसे | हिसाब |

ALHEDAYA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| شَدِيْدًا ۙ | وَّعَذَّبْنٰهَا | عَذَابًا | نُّكْرًا ﴿8﴾ | فَذَاقَتْ | وَبَالَ | اَمْرِهَا |
| शदीद / सख़्त | और अज़ाब दिया हमने उन्हें | अज़ाब | अंजाना/हौलनाक | तो उन्होंने चखा | वबाल | अपने काम का |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| وَكَانَ | عَاقِبَةُ | اَمْرِهَا | خُسْرًا ﴿9﴾ | اَعَدَّ | اللّٰهُ | لَهُمْ | عَذَابًا |
| और था | अंजाम | उनके काम का | ख़सारा | तैयार कर रखा है | अल्लाह ने | उनके लिए | अज़ाब |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| شَدِيْدًا ۙ | فَاتَّقُوا | اللّٰهَ | يٰٓاُولِي الْاَلْبَابِ ۚ | الَّذِيْنَ | اٰمَنُوْا ۛ | قَدْ | ع 14 |
| शदीद | पस डरो | अल्लाह से | ऐ अक़्ल वालो | वो जो | ईमान लाए हो | तहक़ीक़ | |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| اَنْزَلَ | اللّٰهُ | اِلَيْكُمْ | ذِكْرًا ﴿10﴾ ۙ | رَّسُوْلًا | يَّتْلُوْا | عَلَيْكُمْ | اٰيٰتِ |
| नाज़िल किया | अल्लाह ने | तरफ़ तुम्हारे | ज़िक्र | एक रसूल | जो तिलावत करता है | तुम पर | आयात |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اللّٰهِ | مُبَيِّنٰتٍ | لِّيُخْرِجَ | الَّذِيْنَ | اٰمَنُوْا | وَعَمِلُوا | الصّٰلِحٰتِ |
| अल्लाह की | वाज़ेह | ताकि वो निकाले | उन लोगों को जो | ईमान लाए | और उन्होंने अमल किए | नेक |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| مِنَ الظُّلُمٰتِ | اِلَى النُّوْرِ ؕ | وَمَنْ | يُّؤْمِنْ | بِاللّٰهِ | وَيَعْمَلْ | صَالِحًا |
| अंधेरों से | तरफ़ नूर के | और जो कोई | ईमान लाए | अल्लाह पर | और वो अमल करे | नेक |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| يُّدْخِلْهُ | جَنّٰتٍ | تَجْرِيْ | مِنْ تَحْتِهَا | الْاَنْهٰرُ | خٰلِدِيْنَ | فِيْهَآ |
| वो दाख़िल करेगा उसे | बाग़ात में | बहती हैं | उनके नीचे से | नहरें | हमेशा रहने वाले हैं | उनमें |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| اَبَدًا ؕ | قَدْ | اَحْسَنَ | اللّٰهُ | لَهٗ | رِزْقًا ﴿11﴾ | اَللّٰهُ | الَّذِيْ | خَلَقَ |
| हमेशा-हमेशा | तहक़ीक़ | अच्छा दिया | अल्लाह ने | उसे | रिज़्क़ | अल्लाह | वो है जिसने | पैदा किया |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| سَبْعَ | سَمٰوٰتٍ | وَّمِنَ الْاَرْضِ | مِثْلَهُنَّ ؕ | يَتَنَزَّلُ | الْاَمْرُ |
| सात | आसमानों को | और ज़मीन में से | मानिंद उन्हीं के | उतरता है | हुक्म |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| بَيْنَهُنَّ | لِتَعْلَمُوْٓا | اَنَّ | اللّٰهَ | عَلٰى | كُلِّ | شَيْءٍ | قَدِيْرٌ ۙ |
| दर्मियान उनके | ताकि तुम जान लो | बेशक | अल्लाह | ऊपर | हर | चीज़ के | ख़ूब क़ुदरत रखने वाला है |

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

ع 2 5 18

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَّ اَنَّ | اللّٰهَ | قَدْ | اَحَاطَ | بِكُلِّ | شَيْءٍ | عِلْمًا ⑫ ع |
| और बेशक | अल्लाह | तहक़ीक़ | उसने घेर रखा है | हर | चीज़ को | इल्म के ऐतबार से |

## اٰيَاتُهَا: 12 | 66 سُوْرَةُ التَّحْرِيْمِ مَدَنِيَّةٌ 107 | رُكُوْعَاتُهَا: 2

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| يٰٓاَيُّهَا | النَّبِيُّ | لِمَ | تُحَرِّمُ | مَآ | اَحَلَّ | اللّٰهُ | لَكَ ۚ |
| ऐ | नबी | क्यों | आप हराम करते हैं | उसको जो | हलाल किया | अल्लाह ने | आपके लिए |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| تَبْتَغِيْ | مَرْضَاتَ | اَزْوَاجِكَ ؕ | وَاللّٰهُ | غَفُوْرٌ | رَّحِيْمٌ ① | قَدْ |
| आप चाहते हैं | रज़ामंदी | अपनी बीवियों की | और अल्लाह | बहुत बख़्शने वाला है | निहायत रहम करने वाला है | तहक़ीक़ |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| فَرَضَ | اللّٰهُ | لَكُمْ | تَحِلَّةَ | اَيْمَانِكُمْ ۚ | وَاللّٰهُ | مَوْلٰىكُمْ ۚ |
| मुक़र्रर कर दिया है | अल्लाह ने | तुम्हारे लिए | खोलना (कफ़्फ़ारा) | तुम्हारी क़समों का | और अल्लाह | मौला है तुम्हारा |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| وَهُوَ | الْعَلِيْمُ | الْحَكِيْمُ ② | وَاِذْ | اَسَرَّ | النَّبِيُّ | اِلٰى بَعْضِ |
| और वो ही है | ख़ूब इल्म वाला | ख़ूब हिक्मत वाला | और जब | छुपा कर की | नबी ने | तरफ़ बाज़ |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| اَزْوَاجِهٖ | حَدِيْثًا ۚ | فَلَمَّا | نَبَّاَتْ | بِهٖ | وَاَظْهَرَهُ | اللّٰهُ | عَلَيْهِ |
| अपनी बीवियों के | एक बात | तो जब | उसने ख़बर दे दी | उसकी | और ज़ाहिर कर दिया उसे | अल्लाह ने | उस पर |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| عَرَّفَ | بَعْضَهٗ | وَاَعْرَضَ | عَنْۢ بَعْضٍ ۚ | فَلَمَّا | نَبَّاَهَا | بِهٖ |
| उसने बता दिया | बाज़ हिस्सा उसका | और उसने ऐराज़ किया | बाज़ से | तो जब | उसने ख़बर दी उसे | उस (बात) की |

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| قَالَتْ | مَنْ | اَنْۢبَاَكَ | هٰذَا ؕ | قَالَ | نَبَّاَنِيَ | الْعَلِيْمُ | الْخَبِيْرُ ③ | اِنْ |
| वो कहने लगी | किसने | ख़बर दी आपको | इसकी | कहा | ख़बर दी मुझे | ख़ूब इल्म वाले ने | बहुत बाख़बर ने | अगर |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| تَتُوْبَآ | اِلَى اللّٰهِ | فَقَدْ | صَغَتْ | قُلُوْبُكُمَا ۚ | وَاِنْ | تَظٰهَرَا |
| तुम दोनों तौबा करो | तरफ़ अल्लाह के | पस तहक़ीक़ | झुक पड़े हैं | दिल तुम दोनों के | और अगर | तुम एक दूसरे की मदद करोगी |

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| عَلَيْهِ | فَاِنَّ | اللّٰهَ | هُوَ | مَوْلٰىهُ | وَجِبْرِيْلُ | وَصَالِحُ |
| उसके ख़िलाफ़ | पस बेशक | अल्लाह | वो | मौला है उसका | और जिब्राईल | और नेक |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| الْمُؤْمِنِيْنَ ۚ | وَالْمَلٰٓئِكَةُ | بَعْدَ | ذٰلِكَ | ظَهِيْرٌ ④ | عَسٰى | رَبُّهٗٓ |
| मोमिनीन | और फ़रिश्ते | बाद | उसके | मददगार हैं | उम्मीद है | रब उसका |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| اِنْ | طَلَّقَكُنَّ | اَنْ | يُّبْدِلَهٗٓ | اَزْوَاجًا | خَيْرًا | مِّنْكُنَّ | مُسْلِمٰتٍ |
| अगर | वो तलाक़ दे दे तुम्हें | कि | वो बदल कर दे दे उसे | बीवियां | बेहतर | तुम से | मुसलमान |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| مُّؤْمِنٰتٍ | قٰنِتٰتٍ | تٰٓئِبٰتٍ | عٰبِدٰتٍ | سٰٓئِحٰتٍ | ثَيِّبٰتٍ |
| मोमिन | इताअतगुज़ार | तौबा गुज़ार | इबादत गुज़ार | रोज़ादार | शौहर दीदा |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَّاَبْكَارًا ⑤ | يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ | اٰمَنُوْا | قُوْٓا | اَنْفُسَكُمْ | وَاَهْلِيْكُمْ | نَارًا |
| और कुंवारियां | ऐ लोगो जो | ईमान लाए हो | बचाओ | अपने आपको | और अपने घर वालों को | ऐसी आग से |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَّقُوْدُهَا | النَّاسُ | وَالْحِجَارَةُ | عَلَيْهَا | مَلٰٓئِكَةٌ | غِلَاظٌ | شِدَادٌ |
| ईंधन होगा उसका | लोग | और पत्थर | उस पर | फ़रिश्ते हैं | सख़्त | ज़बरदस्त |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| لَّا يَعْصُوْنَ | اللّٰهَ | مَآ | اَمَرَهُمْ | وَيَفْعَلُوْنَ | مَا | يُؤْمَرُوْنَ ⑥ |
| नहीं वो नाफ़रमानी करते | अल्लाह की | उसमें जिसका | उसने हुक्म दिया उन्हें | और वो करते है | जिसका | वो हुक्म दिए जाते है |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ | كَفَرُوْا | لَا تَعْتَذِرُوا | الْيَوْمَ ؕ | اِنَّمَا | تُجْزَوْنَ | مَا |
| ऐ लोगो जिन्होंने | कुफ़्र किया | ना तुम मअज़रत करो | आज के दिन | बेशक | तुम बदला दिए जा रहे हो | उसका जो |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| كُنْتُمْ | تَعْمَلُوْنَ ⑦ ع | يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ | اٰمَنُوْا | تُوْبُوْٓا | اِلَى اللّٰهِ | تَوْبَةً |
| थे तुम | तुम अमल करते | ऐ लोगो जो | ईमान लाए हो | तौबा करो | तरफ़ अल्लाह के | तौबा |

ع 1 7 19

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| نَّصُوْحًا ؕ | عَسٰى | رَبُّكُمْ | اَنْ | يُّكَفِّرَ | عَنْكُمْ | سَيِّاٰتِكُمْ | وَيُدْخِلَكُمْ |
| ख़ालिस | उम्मीद है | रब तुम्हारा | कि | वो दूर कर देगा | तुम से | बुराईयां तुम्हारी | और वो दाख़िल कर देगा तुम्हें |

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| جَنّٰتٍ | تَجْرِیْ | مِنْ تَحْتِهَا | الْاَنْهٰرُ | یَوْمَ | لَا یُخْزِی | اللّٰهُ |
| बाग़ात में | बहती हैं | उनके नीचे से | नहरें | जिस दिन | ना रुस्वा करेगा | अल्लाह |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| النَّبِیَّ | وَالَّذِیْنَ | اٰمَنُوْا | مَعَهٗ ۚ | نُوْرُهُمْ | یَسْعٰی | بَیْنَ اَیْدِیْهِمْ |
| नबी को | और उन्हें जो | ईमान लाए | साथ उसके | नूर उनका | दौड़ता होगा | उनके आगे |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَبِاَیْمَانِهِمْ | یَقُوْلُوْنَ | رَبَّنَآ | اَتْمِمْ | لَنَا | نُوْرَنَا | وَاغْفِرْ |
| और उनके दाएं | वो कहेंगे | ऐ हमारे रब | तमाम कर दे | हमारे लिए | नूर हमारा | और बख़्श दे |

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| لَنَا ۚ | اِنَّكَ | عَلٰی | كُلِّ | شَیْءٍ | قَدِیْرٌ ⑧ | یٰۤاَیُّهَا | النَّبِیُّ | جَاهِدِ |
| हमें | बेशक तू | ऊपर | हर | चीज़ के | ख़ूब क़ुदरत रखने वाला है | ऐ | नबी | जिहाद कीजिए |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| الْكُفَّارَ | وَالْمُنٰفِقِیْنَ | وَاغْلُظْ | عَلَیْهِمْ ؕ | وَمَاْوٰىهُمْ | جَهَنَّمُ ؕ | وَبِئْسَ |
| काफ़िरों से | और मुनाफ़िकों से | और सख़्ती कीजिए | उन पर | और ठिकाना उनका | जहन्नम है | और कितनी बुरी है |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| الْمَصِیْرُ ⑨ | ضَرَبَ | اللّٰهُ | مَثَلًا | لِّلَّذِیْنَ | كَفَرُوا | امْرَاَتَ نُوْحٍ |
| लौटने की जगह | बयान की | अल्लाह ने | एक मिसाल | उनके लिए जिन्होंने | कुफ़्र किया | नूह की बीवी की |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَّامْرَاَتَ لُوْطٍ ؕ | كَانَتَا | تَحْتَ | عَبْدَیْنِ | مِنْ عِبَادِنَا | صَالِحَیْنِ | |
| और लूत की बीवी की | वो दोनों थीं | नीचे | दो बंदों के | हमारे बंदों में से | जो दोनों नेक थे | |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| فَخَانَتٰهُمَا | فَلَمْ | یُغْنِیَا | عَنْهُمَا | مِنَ اللّٰهِ | شَیْـًٔا | وَّقِیْلَ |
| तो उन दोनों ने ख़यानत की उनसे | तो ना | वो दोनों काम आ सके | उन दोनों के | अल्लाह से | कुछ भी | और कह दिया गया |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ادْخُلَا | النَّارَ | مَعَ الدّٰخِلِیْنَ ⑩ | وَضَرَبَ | اللّٰهُ | مَثَلًا | لِّلَّذِیْنَ |
| दोनों दाख़िल हो जाओ | आग में | साथ दाख़िल होने वालों के | और बयान की | अल्लाह ने | एक मिसाल | उनके लिए जो |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| اٰمَنُوا | امْرَاَتَ فِرْعَوْنَ ۘ | اِذْ | قَالَتْ | رَبِّ | ابْنِ | لِیْ | عِنْدَكَ |
| ईमान लाए | फ़िरऔन की बीवी की | जब | उसने कहा | ऐ मेरे रब | बना | मेरे लिए | अपने पास |

وقف لازم

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| بَيْتًا | فِي الْجَنَّةِ | وَنَجِّنِي | مِنْ فِرْعَوْنَ | وَعَمَلِهٖ | وَنَجِّنِي |
| एक घर | जन्नत में | और निजात दे मुझे | फ़िरऔन से | और उसके अमल से | और निजात दे मुझे |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| مِنَ الْقَوْمِ | الظّٰلِمِيْنَ ﴿11﴾ | وَمَرْيَمَ | ابْنَتَ | عِمْرٰنَ | الَّتِيْٓ |
| उन लोगों से | जो ज़ालिम हैं | और मरियम | बेटी | इमरान की | वो जिसने |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| اَحْصَنَتْ | فَرْجَهَا | فَنَفَخْنَا | فِيْهِ | مِنْ رُّوْحِنَا | وَصَدَّقَتْ |
| महफ़ूज़ रखा | अपनी शर्मगाह को | तो फूंक दिया हमने | उसमें | अपनी रूह से | और उसने तस्दीक़ की |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| بِكَلِمٰتِ | رَبِّهَا | وَكُتُبِهٖ | وَكَانَتْ | مِنَ الْقٰنِتِيْنَ ﴿12﴾ ع |
| कलिमात की | अपने रब के | और उसकी किताबों की | और थी वो | फ़रमांबरदारों में से |

ع 2 5 20

AL HUDA INT RNATIONL WELFARE FOUNDATIO